गुरुकुल-पत्रिका

पूर्णाङ्क १००
नवम्बर १९५६

★

व्यवस्थापक श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
सम्पादक समिति श्री सुखदेव दर्शनवाचस्पति
श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार
श्री रामेश बेदी (मन्त्री)

इस अङ्क में

अगले अङ्क में

रामायण काल में भारतीय संस्कृति	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
कालीदास का मथुरा-वृन्दावन वर्णन	श्री कृष्णदत्त वाजपेयी
वेद और गो-पालन	श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति

अन्य अनेक विश्रुत लेखकों की सांस्कृतिक, साहित्यिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी रचनाएँ।

मूल्य देश में ४) वार्षिक
विदेश में ६) वार्षिक

एक प्रति
छः आने

ॐ

गुरुकुल-पत्रिका

[गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की मासिक पत्रिका]

भारतीय संस्कृति—३

आर्यावर्त्त के आर्य

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

वह मनुष्य भारतवर्ष के वर्तमान को पूरी तरह नहीं समझ सकता, जो उस आदि काल के आर्यों को समझने का यत्न नहीं करता। आज के भारतवासी उन प्राचीन आर्यों के वंशज हैं, जिन्होने युगो पहले भारत को आबाद किया था। बीच में व्यतीत हुए युगों में सहस्त्रों परिवर्तन हो गये। प्रकृति बदली और पुरुष भी बदला। नये-नये प्रभाव आये, और अपना अन्श छोड़ गये, परन्तु भारत को बसाने वाली आर्य जाति के वंशजों के मौलिक संस्कार नष्ट नहीं हुए। नये तथा मिश्रित प्रभावों की सतह के नीचे प्राचीन आर्यों की मौलिक भावनाएं आज भी विद्यमान है। यदि कोई व्यक्ति वर्तमान भारतवासियों की सभ्यता, संस्कृति और मनोवृत्ति को भली प्रकार समझना चाहता है तो उसे प्राचीनतम काल के इतिहास के पृष्ठों को खोल कर पढ़ना चाहिये। तभी वह वर्तमान को भली प्रकार समझ सकता है, अन्यथा सम्भावना यही है कि वह वर्तमान की परिधि के बाहर घूमता रहेगा। व्यतीतकाल के जिस पृष्ठ तक हमारी आँखें पहुचती है, उस पर हम आर्य जाति का एक सरल और सुन्दर चित्र देखते है। उस चित्र को हम जहां एक ओर वेदों की ऋचाओ से पढ़ सकते है, वहां उत्तरकालीन भारतीय साहित्य की परम्पराओं से उस का अनुमान भी लगा सकते है। उस समय के आर्यों की धार्मिक, सामाजिक और नैतिक दशा वेदों के अनुकूल थी, अतः वेदों में उसका आभास मिल सकता है।

मैं इस स्थान पर प्राचीनतम आर्यों के जीवन का पूरा चित्र खींचने का यत्न नहीं करूंगा। वह इस लेख-माला के लक्ष्य से बाहर की बात है। यहां तो मैं उस जीवन से सम्बन्ध रखने वाली कुछ ऐसी बातों पर ही प्रकाश डालूंगा, जिन्हें हम आर्यत्व के मौलिक सत्य और अतएव भारतीय सभ्यता और भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व कह सकते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण

प्राचीन आर्य जीवन की सब से पहली और मुख्य विशेषता यह थी कि वह आध्यात्मिकता पर आश्रित था। आध्यात्मिकता से मेरा तात्पर्य यह है कि आर्य लोगो का दृढ़ विश्वास था कि जहां इस संसार में मनुष्य से ऊंची एक महती शक्ति है, जो इस का संचालन और नियन्त्रण करती है, वहां प्रत्येक मनुष्य में एक चेतन शक्ति विद्यमान है, जो उस के शरीर का संचालन और नियन्त्रण करती है। विश्व में ब्रह्म और शरीर में आत्मा की प्रभुता इसी को मै आध्यात्मिकता के नाम से पुकारता हू। प्राचीन आर्यों के विषय में हम जितना कुछ भी जान सके हैं, उस से यह परिणाम निकलता है कि आध्यात्मिकता उन के जीवनों की पृष्ठभूमि थी। वेदों का अध्ययन कीजिये। आप उन में बहुत कुछ पायेंगे। वह बहुत कुछ इतना अधिक है कि उस में भविष्य में होने वाली सब विद्याओं और प्रवृत्तियों के बीज प्रायः हो सकते है। उस बहुत के अन्दर जो एकता ओतप्रोत मिलेगी, वह

आध्यात्मिकता की है। आदि से अन्त तक आप अपने को एक परोक्ष शक्ति के दरबार मे खड़ा पाते है। यही आध्यात्मिकता का सूक्ष्म रूप है। प्राचीनतम आर्यों को विचारधारा में आध्यात्मिकता ऐसे व्याप्त है, जैसे अन्तरिक्ष में वायु।

आध्यात्मिकता को आप अच्छा कहें या बुरा, आप को यह स्वीकार करना पड़ेगा कि प्राचीनतम भारतीय संस्कृति की सब से प्रकट और नित्य सचाई उस की आध्यात्मिकता है, यदि आप इस सचाई को भुला कर भारतवर्ष के इतिहास को या वर्तमान को समझना चाहते हैं, तो आप अवश्य धोखा खायेंगे।

अनेकता में एकता

प्राचीनतम आर्य साहित्य के पढ़ने से हम जिस परिणाम पर पहुंचते हैं, वह यह है कि आर्य लोग संसार में अनेकता और एकता दोनों की सत्ता को स्वीकार करते थे। वे मानते थे कि इस ब्रह्माण्ड को चलाने वाली शक्तियां अनेक है—सूर्य, चन्द्र, पवन, विद्युत, जल आदि अनेक भौतिक शक्तियां है, जिन के आध्यात्मिक नाम आदित्य, सोम, वायु, चन्द्र, वरुण आदि हैं। ये अनेक शक्तियां अपने आप में अलग होती हुई भी वस्तुतः उस एक देव देवाधिदेव की शक्ति से ही अनुप्राणित हैं। और अतएव इन भौतिक शक्तियों के जो आध्यात्मिक नाम है, वे उस देवाधिदेव परम-पुरुष के भी नाम है।

'इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः
अथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्,
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।'

इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, सुपर्ण, गरुत्मान्, यम, मातरिश्वा आदि अनेक नाम उसी एक के हैं। वह एक है, विप्र लोग उसे विविध नामों से पुकारते हैं। संसार में विचारों की, प्रवृत्तियों की और शक्तियों की अनेकता तो है ही, जो उस अनेकता को भुला देता है, वह संसार के वास्तविक रूप को ही भुला देता है। श्रेष्ठता उस वास्तविकता की उपेक्षा कर देने से नहीं, अपितु इस सत्य को समझ लेने में है कि संसार में विद्यमान सब शक्तियों को एक सूत्र में पिरोने वाली उन का समन्वय करने वाली और उन का संचालन करने वाली शक्ति एक है, जो सब शक्तियों की स्वामिनी आदि शक्ति और परम शक्ति है। अनेकता को अङ्गीकार करना और उस अनेकता को एकता के सूत्र में पिरोने वाली एक शक्ति पर विश्वास रखना यह आर्य जाति की जन्मसिद्ध विशेषता है। बाहर के जो लोग भारत-वासियों की धार्मिक उदारता को देख कर आश्चर्यान्वित होते हैं, वे यदि भारतीय संस्कृति के आदिस्रोत की ओर जा कर देखें, तो उन्हें कुछ भी आश्चर्य नहीं होगा।

संघर्षमय जीवन

आदियुग के साहित्य को देखने से यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि उस समय के आर्यों का जीवन संघर्षमय था। उन का सघर्ष दुतरफी था। इधर प्रकृति से लड़ाई, और उधर पुरुष से लड़ाई। गर्मी, सर्दी, तूफान, बादल, अति वृष्टि, अनावृष्टि, हिंसक जन्तु और कमि, सारांश यह है कि सभी प्रकार के प्राकृतिक उत्पातों से लड़ना पड़ता था, और साथ ही दुश्मनों से अपने को बचाना पडता था। बहुत से विदेशी विद्वानों का मत है कि दस्यु या दास किसी जाति विशेष के लोगों का नाम था। यह उन की भूल है। जो आर्य धर्म से विमुख हो कर जाति के शत्रु बन गये थे, यज्ञों का ध्वंस करते और लूटमार का व्यापार करते थे, वही दस्यु, दास आदि नामों से निर्दिष्ट किये जाते थे। उन से आर्यों का निरन्तर संघर्ष चलता रहता था। आर्य लोग ईश्वर विश्वासी थे। वे ईश्वर और उस की शक्तियों को अपना सहा-यक मानते थे। शक्तियों को वे देव या देवता के नाम से निर्दिष्ट करते थे और ईश्वर को देवाधिदेव के नाम से। प्रकृति और पुरुष के निरन्तर संग्राम का ही

परिणाम है कि हम प्राचीन आर्यों के सम्पूर्ण साहित्य में देवासुर संग्राम की चर्चा पाते हैं। उन की प्रार्थनाये उस घोर संघर्ष की सूचना देती हैं।

यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है कि प्राचीनतम आर्य इस समय-समय के निरन्तर जीवन संग्राम मे कभी घबराए हुए या परास्त नही प्रतीत होते। हम सदा उन्हें शत्रुओं पर विजयी होने के लिए सन्नद्ध देखते हैं, 'विजय' उन का मूल मन्त्र था, तभी तो उन्होंने पहले हिमालय की घाटियों पर स्वर्ग राज्य की स्थापना की, फिर वहां से भूमि पर उतरे, तो पर्वतो नदियों और घने जगलों को पार करते और दस्युओं तथा राक्षसों को जीतते हुए समुद्र तक फैल गये। विजय और सफलता उन की नसनस में व्याप्त थी।

राष्ट्र संगठन

वैदिक काल के राजनीतिक सगठन की एक सुन्दरता है। मध्य काल में राजा और प्रजा की जो भावना उत्पन्न हो गई थी, वह हमें अत्यन्त प्राचीन साहित्य में नहीं मिलती। उस समय प्रजा सन्तान को कहते थे। प्रजा शब्द का शब्दार्थ है भी यही। जिसे मध्यकालीन भारत में प्रजा के नाम से निर्दिष्ट किया गया है, उसे वैदिक काल में 'विशः' या और उन के समुदाय को 'राष्ट्र' कहा जाता था। 'राष्ट्र' की कल्पना अत्यंत प्राचीन है। उसे आदि कल्पना कहें तो अनुचित नहीं होगा। जब तक राष्ट्र छोटा रहा जब तक वह हिमालय और उस की घाटियों तक परिमित रहा तब तक उस का एक ही राजा 'इन्द्र' राजा रहा, परन्तु जब आर्य लोग सप्तसिन्धु में उतर आये तब राष्ट्र तो एक ही रहा, परन्तु उस के अनेक खण्ड हो गये, जिन के शासक राजा नृप आदि नामों से सम्बोधित होते थे। राजाओं की इस अनेकता में एकता की शृङ्खला बांधने वाला एक सम्राट् होता था, जो अपनी वीरता और धीरता के कारण उस पद को प्राप्त करता था। सम्राट का पद कुल क्रमागत नहीं होता था। जो क्षत्रिय राजसूय अथवा अश्वमेध यज्ञ द्वारा अपनी शक्ति को सिद्ध कर देता था, वही चक्रवर्त्ती सम्राट् की पदवी से विभूषित हो जाता था। वह सम्राट् आर्य राष्ट्र की एकता का रक्षक और भक्त एवं प्रतीक समझा जाता था।

चातुर्वण्य

'चातुर्वण्य' की कल्पना प्राचीन आर्यों की सब से अधिक महत्वपूर्ण कल्पना थी। उस कल्पना को यदि मध्यकाल या वर्तमान काल की जातपांत की ऐनक लगा कर देखेंगे तो वह एक नितान्त भद्दी और घातक वस्तु प्रतीत होती है, परन्तु यदि प्राचीनतम वैदिक साहित्य में उस के विशुद्ध रूप का अन्वेषण करें, तो हम उस की सुन्दरता और व्यापकता पर मुग्ध हो जायेंगे। सम्पूर्ण मनुष्य समाज को कर्मानुसार चार बड़े भागों में बांट दिया गया है। वे भाग हैं—ज्ञान, शक्ति, धन, और सेवा। इन चारों के समन्वय से समाज चलता है। ये चार विभाग कर्मानुसार थे, जन्मानुसार नहीं। भगवद्गीता में कहा है—'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।' गुणकर्मानुसार बनाये हुए वर्णविभाग में न किसी का पक्षपात था, और न किसी के साथ अन्याय। ब्राह्मण कुकर्म करके शूद्र बन सकता था और शूद्र ज्ञान और कर्मों द्वारा ब्राह्मण पदवी तक पहुंच सकता था। ब्राह्मण जानता था कि यदि मैं अपने योग्य कर्म न करूंगा, तो पतित हो जाऊंगा और शूद्र को विश्वास था कि विद्या और द्वारा मैं ब्राह्मण पदवी को प्राप्त कर सकता हूं। समाज में गुणों की प्रतिस्पर्धा थी, जो मनुष्य की सर्वोत्तम प्रतिस्पर्धा है। आज की दशा को देख कर प्रतीत होता है कि जातिबन्धन हमारी जाति का सब से बड़ा अभिशाप है, परन्तु जब तब चातुर्वर्ण्य गुण कर्मों पर आश्रित था, तब तक आर्य जाति का सब से बड़ा वरदान था।

यह है मोटे शब्दों में वैदिक काल के आर्यों का एक सरल सा रेखाचित्र। उस चित्र में हम एक ऐसी जाति की झलक देखते हैं, जिस ने अपनी दुर्दान्त इच्छा शक्ति, अदम्य साहस और अनन्त विजय कामना के

बल से प्रारम्भ काल के प्राकृतिक और मानुषिक विघ्नों पर विजय प्राप्त कर के संसार में सभ्यता और संस्कृति का श्री गणेश किया है। वे मनुष्य जाति के पथप्रदर्शक और गुरु थे। वह युगों अनवरत बहती हुई ज्ञानगंगा के भागीरथ थे। यह हमारा सौभाग्य है कि हम उन के वंशज हैं। संसार क्या कहता है, इसे भूल जाओ। हम में से जो लोग अज्ञानवश अपने इतिहास को भुला देने का उपदेश देते हैं, उन की भी बात मत सुनो। आओ, संसार विजय का संकल्प कर के विजय पर विजय प्राप्त करने वाले देवाधिदेव के पुजारी उन अपने पूर्वज आर्यों के सामने मस्तक झुका कर, हम प्रतिज्ञा करें कि हम उन के योग्य उत्तराधिकारी बनने का यत्न करेंगे। यदि हमारा संकल्प दृढ है, और आशय उत्तम है तो दुनिया की कोई शक्ति हमें विजयी होने से नहीं रोक सकती।

★

सात नये तत्वों की खोज होने की सम्भावना

संसार के प्रमुख तत्व-अन्वेषक डा० ग्लेन टी० सीबौर्ग ने यह भविष्यवाणी की है कि आगामी ५ से १५ वर्षों तक सात नये तत्वों के निकल आने की संभावना है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से इस वैज्ञानिक ने प्लूटोनियन तत्व की खोज में हाथ बटाया था। आपने कहा कि मेरा अभिप्राय यह है कि तब तत्वों की संख्या १०२ से १०८ तक पहुच जायेगी।

डा० सीबौर्ग ने कहा कि कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में आजकल जो नई किस्म का अणु-विखण्डन यन्त्र तैयार हो रहा है सम्भवतः उसी की सहायता से इन तत्वों को तैयार किया जायेगा। इस मशीन 'हिलेक' या (हैवी आयन लाइनीयर एक्सेलरेटर) कहा जाता है। यह मशीन 'नीओन' (बिना रंग का, गैस वाला तत्व) की तरह के हैवी न्यूक्लियाई या अणु-केन्द्र में–जिस का आणविक वजन २० होता है–तेजी पैदा कर देती है।

इन बड़े अणु-केन्द्रों को यूरेनियम की तरह के जब भारी अणुओं के केन्द्रों पर फेंका जाता है तब नये और भारी तत्वों का निर्माण सम्भव हो सकता है। हल्के वजन की आणविक गोली की सहायता से वैज्ञानिकों ने १९५५ में तत्वों की संख्या १०१ तक पहुंचा दी है। नये तत्व अणु की बनावट के बारे में हमारी जानकारी में वृद्धि करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

—

पृथ्वी के जलवायु में परिवर्तन

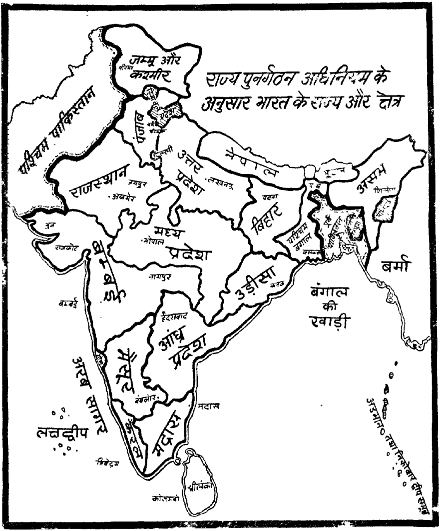
क्या पृथ्वी का जलवायु बदल रहा है? हां, कुछ भूभौतिक शास्त्रियों का विचार है कि लगभग १९०० से पृथ्वी का जलवायु धीरे-धीरे गर्म होता जा रहा है और पिछले ५० वर्षों में पृथ्वी की उष्णता लगभग २.२ डिग्री फारेनहाइट बढ गई है। इस परिवर्तन का कारण यह बताया जाता है कि एशिया के धुर उत्तर की इन बर्फीली चोटियों की बर्फ पिघलने लगी है जहां की बर्फ पहले कभी नहीं पिघलती थी। इस के अलावा बर्फीला क्षेत्र और उत्तर की ओर सिकुड़ता जा रहा है। वैज्ञानिक अब इस बात की खोज में हैं कि यह परिवर्तन केवल उत्तरी गोलार्ध में ही हो रहा है या दक्षिणी गोलार्ध में भी। कई देशों के वैज्ञानिक, इस के लिए अटार्कटिक महासागर में ऋतुपर्यवेक्षण केन्द्र स्थापित करने की योजना कर रहे हैं।

अभी तक पृथ्वी की गर्मी बढ़ने का कारण ठीक ठीक नहीं पता लग सका है। कुछ ऋतुविशेषज्ञों का विचार है कि वायुमंडल में कारबन डाइआक्साइड के बढ़ने से ऐसा हो रहा है। और कारबन डाइआक्साइड प्रति वर्ष उस करोड़ों मन कोयले और तेल से बनता है जो हम लोग फूंकते है। —

भारत का नया मानचित्र

राज्य पुनर्गठन आयोग अधिनियम और बिहार-पश्चिम बंगाल (क्षत्रहस्तांतरण) अधिनियम के अनुसार १ नवम्बर १९५६ से भारत में १४ राज्य हो गए। इन के नाम है : आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, बम्बई,

भारत का नया नक्शा



जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, मैसूर और उड़ीसा। इन राज्यों के अलावा ये ६ केन्द्र शासित प्रदेश होंगे : अन्दमान और निकोबार द्वीप, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, लक्षद्वीप और अमीन द्वीप, मणिपुर और त्रिपुरा।

राज्यप्रमुखों का पद समाप्त हो जाएगा और सब राज्य एक ही श्रेणी के होंगे अर्थात् 'क' 'ख' 'ग' श्रेणीवाला वर्तमान भेद अब नहीं रहेगा।

राज्यों का क्षेत्रफल और जन संख्या इस प्रकार होगी :

राज्य	क्षेत्रफल (वर्गमीलों में)	जन संख्या (१९५१ जनगणना के अनुसार)
आंध्र प्रदेश	१,०५,९६२	३,१२,५६,८१५
असम	८५,०१२	९०,४३,७०७
बिहार	+ ६७,३००	+ ३,८८,२७ ५१७
बम्बई	१,९० ९१९	४,८२,६५,१२०
जम्मू-कश्मीर	९२,७८०	४४,००,०००
केरल	१५,०३५	१,३५,४९,११८
मध्य प्रदेश	१,७१,२०१	२,६०,९५,६८०
मद्रास	५०,११०	२,९९,७४,९३६
मैसूर	७४,३४७	१,९४,०१,८१२
उड़ीसा	६०,१३६	१,४६,४५,९४६
पंजाब	४७, ५६	१,६१,३४,८९०
राजस्थान	१,३२,०७८	१,५९,४६,७३१
उत्तर प्रदेश	१,१३,४०९	६,३२,१५,७ २
पश्चिम बंगाल	+ ३३,८०९	+ २,६२,५८,६४७

+ = लगभग

★

गुर्दे की आणविक परीक्षा

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के चिकित्सा-केन्द्र द्वारा गुर्दे की क्रिया को जानने के लिए एक आणविक परीक्षा की खोज की गई है। इस परीक्षा में रोगी को कोई विशेष कष्ट नहीं होता और यह परीक्षा डाक्टर बड़ी आसानी और आराम से अपने कमरे में ही कर सकता है।

प्रचलित विधियों के अन्तर्गत गुर्दे की परीक्षा में एक्स-रे और निदान-कार्य के लिए खास किस्म की शल्य-क्रिया (चीर-फाड़) की जरूरत पड़ती है। इन कार्यों में बहुत समय लगता है। रेडियो-सक्रिय आयोडीन के प्रयोग से ये सब परेशानियां दूर हो गई हैं।

आणविक परीक्षा विधि के अन्तर्गत रेडियो-सक्रिय आयोडीन के साथ 'डायोड्रास्ट' नामक एक पदार्थ प्रयुक्त किया जाता है। 'डायोड्रास्ट' शरीर में किस प्रकार काम करता है, यह बात रेडियो-सक्रिय आयोडीन की सहायता से पूरी तरह पता चल जाती है। इस कार्य के लिए 'सिण्टेलेशन काउण्टर' नामी उपकरण प्रयोग किया जाता है। 'डायोड्रास्ट' को सुई द्वारा नस में प्रविष्ट किया जाता है। 'सिण्टेलेशन काउण्टर' नामी उपकरण को गुर्दे के ऊपरी भाग पर रख कर रेडियो-सक्रियता को नापा जाता है और इस तरह गुर्दे द्वारा सोख ली जाने वाली 'डायोड्रास्ट' की मात्रा के बारे में पता चल जाता है।

इस के साथ ही रेनग्राम्स नामी विद्युदणुओं की सहायता से नक्शा तैयार करने वाले यन्त्र से प्रत्येक गुर्दे की रक्त प्रदान करने की शक्ति और उस की क्रिया के बारे में पता चल जाता है। यह बात भी पता चल जाती है कि गुर्दे का मार्ग खुला है या पत्थरी रसौली या किसी प्रकार के संक्रामक रोग से यह मार्ग बन्द हो गया है। —आज का अमेरिका।

वेद और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

श्री प्रियव्रत वेदवाचस्पति

इस लेख में हम दिखायेंगे कि वैदिक धर्म में स्त्री की कुटुम्ब से बाहर की सामाजिक स्थिति किस प्रकार की रक्खी गई है।

परदा नहीं है

यहाँ प्रारम्भ में ही यह स्मरण रख लेना चाहिये कि वैदिक धर्म में परदे की जगह नहीं है। विवाह के बाद जब वधू पहले-पहल पति-घर में आती है तो पति-ग्राम के लोगों से पति घर के वाले कहते हैं—"यह कल्याण मङ्गल बढ़ाने वाली वधू हमारे घर में आयी है, आओ इसे देखो।" परदे का न होना स्त्री के सामाजिक जीवन की एक भारी रुकावट को हटा देता है। इस के न रहने से उस का समाज में स्वच्छन्दता से मिलना और विचरना बहुत कुछ आसान हो जाता है।

स्त्रियां राजा भी बन सकती हैं

किन्तु वेद यहीं तक नहीं ठहरा है। अगर हम ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेद और यजुर्वेद के भाष्यों को उठा कर देखें तो हमें वहां स्त्री की सामाजिक स्थिति के सम्बन्ध में जो कुछ मिलता है वह अद्भुत है। वहां हम देखते हैं कि एक स्त्री चाहे तो सेना या पुलिस का सिपाही बन सकती है, प्राड्विवाक अर्थात् वकील बन सकती है, उपदेशक, अध्यापक और व्याख्याता बन सकती है, यहां तक कि वह एक देश की राष्ट्रपति या राजा भी चुनी जा सकती है। वेदों का स्वाध्याय जिन्होंने गम्भीरता से किया है उन्हें पता है कि वेद के राजनैतिक प्रकरणों में राष्ट्र का प्रबन्ध ठीक ढंग से चलाने के लिये प्रत्येक राज्य में "सभा" और समिति नाम की दो नियामक सभाओं के स्थापित करने की आज्ञा है। इन में समिति नामक सभा ऊंची और अधिक शक्तिशाली होती है। अथर्व० ७। ३८। ४ और १२। ३। ५२ में क्रमशः सभा और समिति में जा कर स्त्रियों के भाग लेने और बोलने का वर्णन आया है। जब कोई स्त्री सभा और समिति में जाने के लिये चुनी जा सकती है, तो वह राष्ट्र के किसी भी ऊंचे से ऊंचे पद को सुशोभित करने के लिये भी चुनी जा सकती है, यह स्पष्ट ही है। यजुर्वेद के बीसवें अध्याय के प्रथम दस मन्त्रों में राजा के राज्यारोहण का वर्णन है। इन मन्त्रों में राज्यासीन हो रहा राजा अपने एक आलङ्कारिक शरीर का वर्णन कर रहा है। वह कह रहा है कि मैं राज्यासीन हो कर अपने राष्ट्र में अमुक-अमुक कल्याण-मङ्गल के कार्य करूंगा। वह अपने द्वारा राज्य में किये जाने वाले इन मङ्गल कार्यों के साथ अपने आप को तन्मय कर लेने की भावना व्यक्त करता है। इस तन्मयता की भावना को प्रकट करने के लिये वह राज्य में अपने द्वारा किये जाने वाले एक-एक कार्य को गिना-गिना कर उसे अपने शरीर का एक-एक अङ्ग बताता जाता है। वह रूपक से प्रजा के कल्याण के लिये किये जाने वाले कार्यों को ही अपना शरीर बना लेता है। इस रूपक का अभिप्राय यह है कि राजा यह बताना चाहता है कि राज्यासीन हो जाने के पश्चात् मुझे अपने शरीर के सुख-आराम की चिन्ता नहीं होगी, मुझे तो प्रजा के भांति-भांति के कल्याण करने की ही चिन्ता होगी, अब से प्रजा का कल्याण ही मेरा स्वरूप हो जायगा। राजा-प्रजा कल्याण-रूप शरीर के अपने इस रूपक में पुरुष शरीर के सब अङ्गों को तो गिनता ही है, वह स्त्री के विशेष अङ्ग को भी गिनता है। राजा के शरीर के इस रूपक में पुरुष के विशेष अङ्ग के साथ स्त्री के विशेष अङ्ग को गिनने का स्पष्ट रूप में यह संकेत है कि जिस प्रकार कोई पुरुष राजा चुना जा सकता है उसी प्रकार कोई स्त्री भी राजा चुनी जा सकती है और जैसे राजा चुने गये किसी पुरुष को प्रजा के कल्याण में तन्मय हो जाना चाहिये उसी प्रकार राजा चुनी गई स्त्री को भी प्रजा के कल्याण में तन्मय हो जाना चाहिये। यजुर्वेद के इस वर्णन से यह स्पष्ट है कि पुरुषों की भांति स्त्रियें भी राजा या राष्ट्रपति

चुनी जा सकती है । पाठकों को यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि वेद में निर्वाचन की राज-पद्धति को ही स्वीकार किया गया है आनुवंशिक एकतन्त्र राजपद्धति को नहीं ।

सामाजिक आकांक्षा

यहां ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १५९ वे सूक्त का सारांश दिया जाता है । वैदिकधर्म मे स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को समझने में उस से अच्छी सहायता मिलेगी । एक गृहपत्नी प्रातःकाल उठते ही अपने उद्गार कहती है––"यह सूर्य उदय हुआ है, इस के साथ ही मेरा सौभाग्य भी ऊंचा चढ़ निकला है । मै अपने घर और समाज की ध्वजा हू, उस को मस्तक हूं । मैं भारी व्याख्यात्री हूं । मेरे पुत्र शत्रु विजयी हैं । मेरी पुत्री संसार में चमकती है । मै स्वयं दुश्मनों को जीतने वाली हूं । मेरे पति का असीम यश है । मैने वह त्याग किया है जिस से इन्द्र (सम्राट्) विजय पाता है । मुझे भी विजय मिली है । मैंने अपने शत्रु निःशेष कर दिये है–।"

वेद के इस सूक्त की व्याख्या की आवश्यकता नहीं है, वह स्वयं अत्यन्त स्पष्ट है । इस प्रकार हम देखते है कि वैदिकधर्म में स्त्री की सामाजिक स्थिति पर किसी भी प्रकार की रुकावट नही है । वह जो कुछ भी चाहे बन और कर सकती है । उसे अपनी शक्ति को विकसित कर के ससार में कुछ भी बनने और करने का अधिकार है जो कि पुरुष बन और कर सकता है । उस के सब क्षेत्रों में अधिकार पुरुष के समान हैं । जो कुछ पुरुष प्राप्त कर सकता है वह स्त्री भी प्राप्त कर सकती है । जहा मनुष्य पहुच सकता है वहां स्त्री भी पहुंच सकती है । दोनो के अधिकार समान है ।

जहां तक स्त्री के अधिकारों का प्रश्न है वहां तक उन्हें कोई हड़प नहीं कर सकता । एक स्त्री अपनी इच्छा और शक्ति के अनुसार जो कुछ बनना चाहे बन सकती है । उसे रोका नही जा सकता । प्रत्युत समाज को उस की रक्षा करनी होगी ।

एक महान् कर्तव्य

परन्तु यदि हम स्त्री-पुरुष सम्बन्धी वेद के सारे प्रकरणों को मिला कर पढ़ें और उन की भिन्न-भिन्न शिक्षाओं का समन्वय करें तो हमें उन से एक विशेष निर्देश निकलता प्रतीत होता है । ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वेद स्त्रियों की सेवा में एक डेपुटेशन ले जाते हों और उन से कहते हों कि देवियो ! अधिकार और हक की दृष्टि से तुम सर्वथा पुरुषों के समान हो तुम्हारे हक छीने या रोके नहीं जा सकते। तुम जो चाहो बन सकती और कर सकती हो । इस में तुम्हारी सहायता की जायेगी । परन्तु हम तुम्हें आफिस की कुर्सियों, न्यायाधीशों के मञ्चों और राष्ट्रपतियो के सिंहासनों की की ओर जाने से जान-बूझ कर मना करना चाहते है । हम इन सब कामो से ऊचा एक काम तुम्हारे सिपुर्द करना चाहते है उसे तुम्हीं कर सकती हो । पुरुष उसे नहीं कर सकते । वह काम है मनुष्य-समाज को सच्चे और वास्तविक मनुष्य पैदा कर के देना ।

सज्जनो ! आज हमें घोड़ों की नस्ल की उन्नति करने के लिये अश्व-विशेषज्ञ की आवश्यकता है, हम उन्हें तैयार करते है । गौओ की नस्ल और कुत्ते-बिल्लियों की नस्ल को उन्नत करने के लिए गो-विशेषज्ञ, कुत्ता-विशेषज्ञ और बिल्ली-विशेषज्ञों की आव-आवश्यकता है, और हम उन्हें तैयार करते हैं । किंतु आज हम मनुष्यो की नस्ल को उन्नत करने के लिये मानव-विशेषज्ञो की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते है । वेद कहता है कि देवियो तुम ! मनुष्यों की नस्ल को उन्नत करने वाले मानव-विशेषज्ञों का काम करो । मनुष्य-समाज को सच्चे मनुष्य तैयार कर के देना मनुष्य समाज की सब से भारी सेवा और सब से पवित्र काय है ।

आप वेदों को पढ़ जाइये । वहां विवाह का एक मात्र उद्देश्य लम्पटता से बच कर सन्तान उत्पन्न करना बताया गया है । स्थान-स्थान पर स्त्री के लिये

प्रजावती, पुत्रवती, प्रजाकामा वीरसूः आदि विशेषणों का प्रयोग हुआ है। पचासों जगह उस से उत्तम सन्तान देने की प्रार्थनाएँ की गई है। वेद विवाह का प्रयोजन सन्तानोत्पत्ति बताते हुए स्त्रियों से इस प्रयोजन को विशेष रूप से पूरा करने का आग्रह क्यों करते हैं यदि यह जानना हो तो हमें ऋग्वेद के १० वें मण्डल का ४७ वा सूक्त उठा कर देखना चाहिये। उस सूक्त में सन्तान के अभिलाषी परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो ! हमें अमुक-अमुक गुणों वाली सन्तान दी जिये। आप के विनोद के लिये उस सूक्त का सारांश यहां दिया जाता है—'हे परमात्मन् ! हम आप से एक धन मांगते है। वह धन है, सर्वगुणसंपन्न सन्तान। आप तो सभी धन देने वाले है। हम ने आप का दाहिना हाथ पकड़ लिया है। आप हमें गोपतिं, आयुधारी, रक्षा देने वाले, सन्मार्ग पर ले चलने वाले, क्रियाशील, भारी-भारी आपत्तियों से बचाने वाले, वेदज्ञ, देवों के गुणवाले, लम्बे-चौड़े सुडौल शरीर वाले, गम्भीर, ऋषियो की आज्ञा सुनने वाले, उग्र, दुश्मनों का पराभव करने वाले, धन और अन्न के रक्षक, वीर, पार लगाने वाले, धनदाता, सुदक्ष, दस्युहन्ता, शत्रुओं के नगरों का भेदन करने वाले, सत्यशील, घोड़ों वाले, रथो वाले, वीरों वाले सैकड़ों और हजारों शक्तियों वाले, बलिष्ठ, सदाचारी लोगों से घिरा रहने वाले, सुख में रहने वाले और सुख देने वाले, पूर्णशक्ति से युक्त सातों इन्द्रियों वाले, व्रत को धारण करने वाले, सुमेधा, बृहस्पति अर्थात् बडों-बड़ों के रक्षक या ज्ञानी, औरों को बुद्धि देने वाले, लोगों को सब से बढ़ कर आश्रय और सहायता दे सकने वाले पुत्र-रूप धन को हमें दीजिये। हम आप से हृदय से प्रार्थना करते हैं।' सूक्त द्वारा प्रार्थना करने वाला मानो गुणावली गिनाते-गिनाते थक जाता है पर उस का सन्तोष नहीं होता। आखिर वह दो विशेषण प्रयुक्त करता है—'चित्रं वृषणम्'—अद्भुत और वर्षा करने वाला। 'चित्र' या अद्भुत में वे सारे गुण आ जाते हैं जो कि यहां गिनाये नहीं जा सके, और 'वृषण' या वर्ष करने करने वाला विशेषण सन्तान में अभिलषित सारी परोपकार-भावनाओं की सूचना दे देता है। सूक्त के शब्दों में जो रस, सुन्दरता और भाव हैं उन्हें हम अपने शब्दों में नहीं ला सके है। जब इतनी ऊंची सन्तान प्राप्त करना हमारा ध्येय हो तो उस के लिये हमें विशेष यत्नशील होना पड़ेगा। मनुष्य-समाज को मनुष्यों का समाज रखने के लिये हमें उत्कृष्ट सन्तान की कितनी आवश्यकता है यह आसानी से समझा जा सकता है। उत्कृष्ट सन्तानें मनुष्य-समाज को देवियें ही दे सकती हैं। यह कार्य पुरुषो से साध्य नहीं है। इसी लिये वेद में स्त्रियों के उत्कृष्ट सन्तान पैदा करने के कर्तव्य पर सब से अधिक बल दिया गया है।

यहां यह न समझ लेना चाहिये कि स्त्रियों से उत्तम मनुष्य घड़-घड़ कर समाज को देने की प्रार्थना विशेष रूप से कर के वेद उन्हें इस प्रकार की शिक्षाएं और विद्या-विज्ञान जानने से वंचित करना चाहता है। शिक्षा के क्षेत्र में वेद स्त्रियों की जो स्थिति रखता है वह हम ने संक्षेप से अच्छी तरह दिखा दी है। यहां तक वेद स्त्रियों की शिक्षा पर बल देता है कि विवाह के अवसर पर वेद कन्या के माता-पिता से दहेज में भी ऊंचे प्रकार की शिक्षा ही देने को कहते हैं। वस्तुतः देखा जाये तो सन्तानोत्पत्ति के मार्ग पर चलने वाली देवी को उच्च शिक्षा की भारी आवश्यकता है। एक घडा बनाने वाले कुम्हार को घडा बनाने से पहले घड़े और मिट्टी के सम्बन्ध में कितना ज्ञान अपेक्षित होता है यह हरेक जानता है। जो देवी मनुष्य बनाने का काम अपने ऊपर लेना चाहती है उसे मनुष्य-स्वभाव के विस्तृत ज्ञान की जो आवश्यकता है उसे आखों से ओझल नहीं किया जा सकता। किस समय मनुष्य-समाज को कैसे मनुष्यों की आवश्यकता है यह समझ सकना और उस के अनुसार उपयुक्त मनुष्य पैदा कर के समाज को देना पूर्ण शिक्षित माताओं से ही बन सकता है। पूर्ण शिक्षित मातायें ही यह जान सकेंगी

कि समय की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष प्रकार के मनुष्य पैदा करने के लिये सन्तानों को किन परिस्थितियों में रखना चाहिये, उन पर कैसे संस्कार किस तरह डालने चाहियें। इसीलिये वेद स्त्रियों की शिक्षा पर पूरा बल देता है और उन से अपनी शक्तियों और योग्यता को मनुष्य-समाज के कल्याण और संसार की उन्नति के लिये उत्कृष्ट सन्तानें पैदा करने में लगाने की मानो प्रार्थना करता है। स्त्रियें अपनी सारी योग्यता उत्तम सन्तानें तैयार करने में लगा दें। क्योंकि यह कार्य वे ही कर सकती हैं। पुरुष से यह कार्य बन नहीं सकता। और पुरुष सब प्रकार की सांसारिक चिन्ताओं से स्त्रियों को मुक्त करने का भार अपने ऊपर ले लें। किन्तु यह कभी न भूलना चाहिये कि जो देवियें सन्तानोत्पत्ति के मार्ग में न पड़ना चाहें —विवाहित जीवन में प्रवेश न करना चाहें—उन्हें पूरा अधिकार है कि वे पुरुषों की तरह जो कुछ बनना चाहें बनें,—जिस तरह समाज की सेवा करना चाहें करें। विवाहित स्त्री भी यदि सन्तान के प्रति अपने कर्तव्य में किसी तरह की कमी न आने देते हुए समाज-सेवा का कार्य करना चाहे तो खुशी से कर सकती है।

इस से आप भली भांति समझ गये होंगे कि वैदिक धर्म में स्त्रियों की स्थिति कितनी स्वतन्त्र, कितनी सम्मान-जनक और कितनी गौरवमय है।

माननीयः श्री जवाहरलालः

(६८ तमं जन्मदिवसमुपलक्ष्याभिनन्दनम्)

[१]

स्पष्टवक्ता राजनीतिज्ञाग्रणीर्लोके ऽखिले
शान्तिमानेतुं जगत्यां, यः सदा यतते ऽनिशम्।
यस्य हेतोर्भारतं, मान्यं पदं प्राप्तं भुवि
श्री जवाहरलालसंज्ञं, तं बुधं मुदिता नुमः॥

[२]

शिल्पविज्ञानादिदृष्ट्या, भारतं सर्वोच्चतां
प्राप्नुयादुद्देश्यमेतद् मानसे धत्ते हि यः।
कर्मशीलो यो दिवारात्रं स्वदेशस्योन्नतौ
श्री जवाहरलालसंज्ञं, तं बुधं मुदिता नुमः॥

[३]

वर्तते दृष्टिर्विशाला, यस्य लोकैक्यान्विता
द्वेष्टि निखिलेष्वेव रूपेष्वत्र यः सङ्कीर्णताम्।
यो दिदृक्षुः सर्वजातीयेषु सौहार्दं सदा
श्री जवाहरलालसंज्ञं, तं बुधं मुदिता नुमः॥

[४]

संस्कृतं लभतांसुमानं, स्याच्च गोहिंसा निषिद्धा
राष्ट्रभाषा भारती स्याद्, यात्रहिन्दीतिप्रसिद्धा।
भारतीयासंस्कृतिः स्यात्, सर्वकार्येष्वत्र सिद्धा
श्री जवाहरलालमित्थं, प्रार्थयन्तस्तं नुमः॥

[५]

दीर्घमायुः शुद्धबुद्धिं, देवदेवेशः सदा
कीर्तिमारोग्यं प्रदद्याद्, देशनेत्रे सन्ततम्।
स्यात्समृद्धं राष्ट्रमेतत्, सर्वसुखभागुत्तमं
श्री जवाहरलालहेतोः प्रार्थयन्तस्तं नुमः॥

—धर्मदेवो विद्यामार्तण्डः।

★

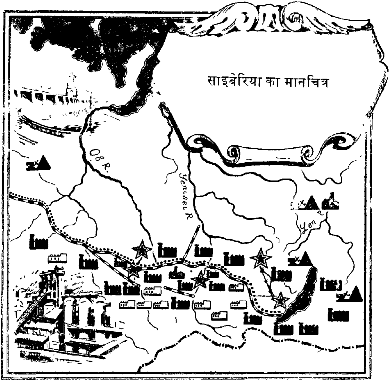
कितनी विराट् है साइबेरिया की प्राकृतिक सम्पदा !

किसी प्राचीन लोकगीत की एक पंक्ति है—'अरी ओ तिक्त साइबेरिया, अरी ओ क्रोधी सौतेली माता !'

इतनी अकूत सम्पत्ति वाली यह धरती सौतेली माँ कह कर क्यों पुकारी गयी ? इस प्रश्न का उत्तर सीधा सा है—ज़ारशाही ने साइबेरिया को जीता तो पर जीत कर उसे अपना उपनिवेश बना लिया ।

ज़ारशाही अफसरों की एक पूरी फ़ौज बेशर्मी और बेदर्दी से स्थानीय आबादी के ऊपर टूट पड़ी । वह चिरकाल से साइबेरिया में बसे दर्जनों कबीलों और जातियों की मौत का पैगाम बन गयी । उन की मदद अन्य 'सभ्यता के वाहकों' ने की । मुख्यतः ये व्यापारी लोग थे जो स्थानीय जनता को ठग कर उन से लगभग मुफ्त में ही, ह्विस्की की एक बोतल पर, अमूल्य रोयेंदार खाल और कच्चे सोने के पिण्ड प्राप्त किया करते थे ।

प्रतियोगिता के डर से ज़ारशाही के सामाजिक आधार-स्तम्भ, रूसी जमींदारों ने साइबेरिया में उद्योग और कृषि के विकास में रुकावट डाली । मध्ययुग की भाँति देश के अन्दर चुङ्गी का एक घेरा था और साइबेरिया के अन्न का रूस के मध्य भागों में आयात करने पर चुङ्गी देनी पड़ती थी । सरकार साइबेरियाई उद्योगों में पूँजी लगाने को प्रोत्साहन नहीं देती थी और इस शताब्दी के प्रारम्भिक भाग में तो कुछ पुराने कारखाने भी बन्द होने लगे थे । १६०८ में



साइबेरिया जैसे विशाल प्रदेश से रूस के कुल औद्योगिक उत्पादन का केवल साढ़े तीन प्रतिशत ही प्राप्त होता था। केवल सोना निकालने का लुटेरू धन्धा ही फल-फूल रहा था, पर वह भी ज़ारशाही सरकार द्वारा ब्रिटिश तथा अन्य अधिकार-पत्र-प्राप्त विदेशी कम्पनियों के हवाले कर दिया गया।

१७ वी शताब्दी में ही ज़ारशाही साइबेरिया को एक विराट् जेलखाने में परिवर्तित करने लगी थी। जो भी उस के विरुद्ध ऊंची आवाज़ करने का साहस दिखाता उसे खास अवधि का सपरिश्रम कारवास-दण्ड दे कर या अनिवार्य रूप में जा बसने के लिए साइबेरिया निर्वासित कर दिया जाता। रूस के सर्वश्रेष्ठ सपूत 'क्रोधी सौतेली माता' का परिचय प्राप्त करने को बाध्य किये गये।

१९०५ की क्रांति से डर कर ज़ारशाही सरकार ने किसानों का, मुख्यतः गरीब किसानों का साइबेरिया के लिए व्यापक पैमाने पर निष्क्रमण कराने का यत्न किया ताकि वे देश के सब से महत्वपूर्ण केन्द्रों से हट जाँय और इस प्रकार कृषि-समस्या 'हल' हो जाय। बड़े पैमाने पर विज्ञापन किया गया कि साइबेरिया जाने वालों को वहा परती पड़ी ज़मीनों में से बड़े-बड़े टुकड़े मिलेंगे। ज़मीन के भूखे लाखों किसान इन बातों में आ गए। किन्तु, जैसा कि लेनिन ने लिखा है, यह निष्क्रमण नौकरशाहाना ढंग से संगठित किया गया था। किसानों को घर, पशु या नक़्द नही दिया गया। फलस्वरूप उन में से कुछ और भी क्रांतिकारी बन कर रूस लौट आये। शेष साइबेरियाई आवारा-गर्दों, भिखमंगों और डाकुओं की जमात में शामिल हो गए या साइबेरिया के आतिथ्यविमुख खुले आकाश के नीचे मर-खप गए।

पर साइबेरिया को सौतेली माँ कहते हुए भी रूसी



येनिसेई के तट पर चेखोव

जनता यह जानती थी कि वह दयालु माँ बन सकती है। अठारहवी शताब्दी में ही महान् क्रांतिकारी-मार्ग-दर्शक रादिश्चेव ने कहा था कि, साइबेरिया का भविष्य महान् है। उस ने लिखा: 'कितनी विराट् है साइबेरिया की प्राकृतिक सम्पदा! विश्व के इतिहास में वह महती भूमिका अदा करेगा।

चेखोव साइबेरिया की गरीबी और जंगलीपन पर स्तम्भित रह गया था, किन्तु साथ ही वहां प्रकृति के भव्य रूप ने उसे विभोर कर दिया और येनिसेइ के तट से उस ने लिखा, 'किसी दिन तेजस्वी मेधावी और साहसपूर्ण जीवन इन किनारों को भासमान कर देगा।'

साइबेरिया का सूर्य

साइबेरिया अपनी कठोर जलवायु के लिए विख्यात है। वेर्खोयान्स्क के याकूती कस्बे के निकट

दुनिया का सब से अधिक सर्द स्थान पड़ता है। यद्यपि साइबेरिया का आकाश प्रायः सदा ही स्वच्छ रहा करता है किन्तु केवल अल्पकालीन पर बहुत गर्म ग्रीष्म ऋतु को छोड़ कर यहां की धूप में बहुत कम उष्णता होती है। एक 'बिजली का सूरज'—यह दुनिया का सब से बड़ा जल-विद्युत स्टेशन होगा—साइबेरिया में बन रहे दसियों हजार घरों तथा दर्जनों नए नगरों और सैकड़ों कारखानों को ताप और बिजली देगा। बैकाल झील से निकलने वाली अङ्गारा नदी पर वैयाकार जल-विद्युत स्टेशनों की एक मेखला का निर्माण हो रहा है। उक्त झील में तीन बाल्टिक सागरों के बराबर पानी है।

अङ्गारा इतनी गहरी नदी है और उस का पानी इतना खड़ा गिरता है कि लम्बाई में अधिक न होते हुए भी वह वोल्गा, कामा, नीपर और दान जैसी बड़ी नदियों से कुल मिला कर जितनी बिजली निकलेगी उस से अधिक पैदा कर सकती है।

जिस जगह अङ्गारा नदी बैकाल झील से निकलती है, वहीं इर्कुत्स्क का प्राचीन रूसी नगर है जिसे पूर्वी साइबेरिया की राजधानी कहते हैं। नगर के पास ही ६,६०,००० किलोवाट क्षमता का इर्कुत्स्क बिजली घर बन रहा है। वह इसी वर्ष काम करने लगेगा। और इर्कुत्स्क से ६०० किलोमीटर की दूरी पर, अङ्गारा के प्रवाह की दिशा में, ब्रात्स्क जल-बिजलीघर बन रहा है जो दुनिया के सब से बड़े बिजलीघरों में होगा। ३२,००,००० किलोवाट की क्षमता वाला यह बिजलीघर वोल्गा स्थित कुजबाइशेव और स्तालिनग्राद के जल-विद्युत स्टेशनों द्वारा उत्पादित कुल शक्ति से भी अधिक बिजली देगा।

ब्रात्स्क बिजलीघर द्वारा उत्पादित बिजली देश में सब से सस्ती होगी। उस से प्रतिवर्ष होने वाली कोयले की बचत दो करोड़ टन के बराबर होगी। ब्रात्स्क बिजलीघर की शक्ति १४ करोड़ आदमियों की शारीरिक शक्ति के बराबर है। अर्थात् एक बिजली-घर की धारा जितना काम कर सकती है उतना काम कोई बड़ा राष्ट्र भी हाथों से नहीं कर सकता!

महासागर का भाई

अङ्गारा येनिसेई में, जो दुनिया की सब से बड़ी नदियों में है, गिरती है। येनिसेई नदी इतनी विराट् और गहरी है कि उसे प्रायः 'महासागर का भाई' कहते हैं। क्रास्नोयार्स्क बड़े साइबेरियाई नगर से थोड़ी दूर ही, येनिसेई में एक बड़ा जल-बिजलीघर बन रहा है। उस की क्षमता ब्रात्स्क बिजली-घर के बराबर होगी। वर्तमान पंच-वर्ष में उस का काम चालू हो जायगा। वर्तमान पंचवर्षीय योजना में एक और जल-बिजलीघर येनिसेइस्क नगर के निकट जहाँ अङ्गारा येनिसेई में मिलती है, बनने वाला है। इस बिजलीघर की क्षमता ऐसी होगी कि सुन कर हवाई ज्ञात होगा—लगभग ५० लाख किलोवाट।

क्रास्नोयार्स्क के पश्चिम, नोवोसिबिर्स्क, जिसे पश्चिमी साइबेरिया की राजधानी समझा जाता है, के निकट महान् ओब नदी पर विशाल नोवोसिबिर्स्क बिजलीघर बन रहा है। यह अगले साल चालू हो जायगा और ओब पर बनने वाले जल-बिजलीघरों की मेखला की प्रथम कड़ी होगा।

सोवियत वैज्ञानिक और इंजिनियर महान् साइबेरियाई नदियों के उपयोग के लिए इस से भी अधिक महत्वाकांक्षी योजनाएँ तैयार कर रहे हैं। वे इन में से कुछ नदियों की, उत्तरमुखी धारा को, जो आर्कटिक में गिर कर केवल वहां की बर्फ गलाने का काम करती है, दक्षिण मोड़ देना चाहते हैं जहां सोवियत संघ की भूमि के कुल सातवें भाग को छेंक रखने वाले विस्तीर्ण रेगिस्तान हैं।

यह मान लिया गया है कि हवाई ज्ञात होने वाली ये योजनाएँ पारमाणविक शक्ति की सहायता से कार्यान्वित की जा सकती हैं। इस समस्या से अगली पंचवर्षीय योजनाओं से निपटना है।

जादू की कुञ्जी

बिजली की शक्ति वह जादू की कुंजी है जो साइबेरिया के सभी खजानों के ताले खोलने में सहायक होगी। इस विरल आबादी वाले इलाके में विद्युत-शक्ति और उस से चलने वाली मशीन अपेक्षाकृत थोड़े लोगों द्वारा संचालित होंगी, परन्तु वे इतना काम करेंगी जितने के लिए पहले लाखों मजदूरों की जरूरत पड़ती।

साइबेरिया में अलौह-धातुओं तथा रसायनों के बड़े-बड़े कारखाने बनाने की योजना बनायी गयी है। लोहे और इस्पात की बड़ी-बड़ी खानें भी बनेंगी। दो या तीन पंचवर्षीय योजनाओं के भीतर देश के पूर्वी भाग में ऐसे कारखाने हो जायेंगे जो प्रतिवर्ष डेढ से दो करोड टन कच्चा लोहा तैयार करेंगे।

वृहत्तम चार नये कारखानों का कच्चे लोहे का उत्पादन इतना हो जायगा जितना इस समय पूरे ब्रिटेन या पश्चिमी जर्मनी का है।

साइबेरिया का उद्योग धन्धा ऐसे लम्बे डग भरेगा!

इस के अलावा, पंचवर्षीय योजना के दौरान एक सौ से अधिक इंजिनियरिंग के कारखाने बनाये जायेंगे। वे हार्वेस्टर कम्बाइन (फसल काटने के यन्त्र विशेष) तथा खानों, धातुओं के कारखानों और रसायन के कारखानों में काम आने वाला साज-सामान तैयार करेंगे। इसी तरह साइबेरिया में छोटे उद्योगों का भी विकास किया जायगा। पाँच वर्षों के भीतर जो कारखाने चालू हो जायेंगे वे ये हैं: कन्स्क में बढ़िया ऊन की बड़ी मिलें, क्रास्नोयार्स्क में रेशमी वस्त्रों की मिलें, तथा बर्नौल में सूती मिलों का दूसरा भाग। साइबेरिया अपने नकली रेशम के लिए प्रसिद्ध हो जायगा। इस का नकली रेशम के कपड़ों का उत्पादन फ्रांस या इटली के आज के उत्पादन से अधिक होगा। साइबेरिया की नदियों से प्राप्त विद्युत शक्ति खेती में बिजली का उपयोग सम्भव कर देगी। फलस्वरूप साइबेरिया की और भी लाखों हैक्टर उपजाऊ अछूती भूमि में खेती होने लगेगी।

साइबेरिया में सूखा नहीं पड़ता तथा यहाँ प्रभूत-पूर्व फसल हो सकती है। अन्न-भाण्डार के रूप में, 'घी-दूध की नदियों वाले देश' के रूप में इस का महत्व निरन्तर बढ़ेगा।

बड़े मार्गों से हो कर

पिछली शताब्दी के अन्त में बहुत ही थोड़े समय के भीतर साइबेरिया हो कर संसार की सब से बड़ी रेल-लाइन बना कर रूसी मजदूरों और इंजिनियरों ने बड़ी बहादुरी का काम कर दिखाया। सोवियत काल में साइबेरिया में और भी कई सौ किलोमीटर में नयी लाइनें बनायी गयीं। सोवियत संघ के सुदूर-उत्तर में महान् उत्तरी सागरीय मार्ग को जहाजों के जाने के लायक बनाया गया और साइबेरिया की उन नदियों के मुहानों पर जो अपना पानी आर्कटिक सागर में गिराती है, बड़े-बड़े बन्दरगाह बनाये गए। आर्कांजेल्स्क से ब्लादीवोस्तक को जाने वाले जहाज इन बन्दरगाहों से अपना माल पहुंचाने लगे।

साइबेरिया में एक तीसरा बड़ा मार्ग भी खुला। यह आकाश-मार्ग था। रेल ने जहाँ पैदल जाने की अपेक्षा यात्रा-काल दस गुणा कम कर दिया, विमान ने यात्रा-काल अस्सी गुणा कम कर दिया।

छटी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत तीनों बड़े उत्तरी मार्गों का पुनर्निर्माण किया जाएगा तथा मास्को इर्कुत्स्क लाइन पर, जो ५००० किलोमिटर लम्बी है, गाड़ियाँ बिजली से चलेंगी। बन्दरगाहों का पुनर्निर्माण किया जा रहा है तथा महान् उत्तरी सागर मार्ग में जहाजों की संख्या बढ़ाई जा रही है। संसार का पहला परमाणु चालित बर्फ-तोड़क इसी मार्ग पर चलेगा। बड़े-बड़े जेट विमान विमान अब साइबेरिया के आकाश-मार्ग से यात्री ले जाते हैं। कुछ ही दिन पहले एक टीयू-१०४ विमान मास्को से इर्कुत्स्क छः घण्टे से कम समय में गया। मानव साइबेरिया की दूरी पर विजय प्राप्त कर रहा है। —सोवियत भूमि।

समर्पण-पत्र

श्री पीताम्बर नारायण शर्मा

एक महादानी--उदारचेत्ता ने किसी भिखारी से से कहा--हम तुम्हे कुर्ता देते हे, जिस का अगला-पिछला हिस्सा नही है। बाहें स्वय लगवा लेना, तुम्हारा काम चल जाएगा। हाँ ! अब ज्यादा अधिक देर न करो, जाओ !

भिखारी चला गया बड़ा दु:खी हो कर, पर आप सुन कर हस रहे है ?

किन्तु, हंसिये नही। आप न भिखारी पर दया कीजिए और न दाता पर कुढ़िये। देखिये उस की भावना को,जिसमें कुछ देने का भाव ही निहित है लेने का नहीं। दान की बडी महिमा है पर उस की कई कोटियाँ है। ऐसे भी दान है जिन में प्रत्यक्ष में कुछ दिया दिया नही जाता,फिर भी उनका व्यक्ति तथा समाज पर बडा भारी प्रभाव पड़ता है। जैसे कोई किसी को विद्या देता है,उपदेश देता है, किसी की प्रशसा करता है पर किसी को गालियां देता है। प्रशंसा-उपदेश का प्रभाव चाहे तत्काल न भी दीखे पर गाली का प्रभाव तो हमें उसी समय दीख जाता है। ईश्वर की भक्ति जिसमें नाम गुण कीर्तन-स्मरण आते है--भी इसी प्रकार का आदान-प्रदान है। यह सब दो-चार बोल का ही खेल है जो केवल मात्र हवा ही हवा है। जो मुख्य बात है, वह है भावना और उसका प्रभाव। सो, दोनों की उदात्त भावना को देखिये और उस की सराहना कीजिए।

दान दाता की उदात्त वृत्तियो का द्योतक है, ऐसा माना जाता है। वह उदात्त शक्तियां है—जैसे करुणा, ममता, उदारता, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा आदि। लेकिन यह गलत भी है। दान उदात्त वृत्तियो का ही द्योतक न हो कर कई ार मनुष्य की उन वृत्तियो की ओर भी उद्घाटन करता है जिन्हे हम नैतिक भाषा में अनुदात्त-हीन अथवा राक्षस कहा करते हैं, जैसे--राग, द्वेष, मोह आदि। इन में से 'गाली दान' की चर्चा हो चुकी है, शेष की आगे यथा स्थान होती रहेगी।

दान की चर्चा यहा इस लिये चलाई गई है कि 'समर्पण' का भाव भली प्रकार हृदयंगम हो सके, क्योकि 'समर्पण' भी इसी दान की एक कोटि है। और 'समर्पण-पत्र' से हमारा अभिप्राय उस पृष्ठ से है जो लेखक की किसी रचना के साथ, मुख पृष्ठ के बाद और उस के आरम्भिक परिच्छेद से पहले, जुड़ा-लगा होता है।

किसी भी रचना का सम्बन्ध इन तीनो से रहता है—लेखक, प्रकाशक-वितरक और पाठक। समस्त पुस्तक का सम्बन्ध इन तीनो से अनिवार्य तथा आवश्यक रूप से रहता है किन्तु आश्चर्य,महान् आश्चर्य का विषय है कि उसी रचना का वह अभागा 'समर्पण पत्र' तीनों के भाग्य से बधा न हो कर के वह लेखक से ही सम्बन्ध रखता है। पाठक चाहे तो उस रचना को उस में दिये गये 'समर्पण पत्र' को बिना पढ़े ही, भरपूर लाभ उठा सकता है। इसी प्रकार प्रकाशक-वितरक को भी समर्पण-पत्र' के न रहने से ही अधिक लाभ होता है कि ग्रन्थ की ज्यादा बिक्री हो और 'न रहने' से ही कोई घाटा कि खपत में कमी हो। किन्तु, लेखक के लिए उसका महत्व अत्याधिक रहता है। अत्यधिक महत्व रहता है तभी तो वह देता है ! कि उस लेखक के लिए यह घोर अपमान की और एक विचारक के के लिए बड़े आश्चर्य की बात है कि 'समर्पण पत्र को जो लेखक की परम प्रिय था अति महत्वपूर्ण वस्तु है, उसी पर उप जी वा व्यक्ति-प्रकाशक-पाठक---इतना तुच्छ और व्यर्थ समझते है। और वह लेखक ह जो समस्त रचना का निर्माण-कर्ता, उस के अस्तित्व में लाने वाला है, उसी की प्रिय महत्वपूर्ण वस्तु की इतनी अवहेलना ! इतनी उपेक्षा !!

किन्तु किसी रचना के 'समपरण पत्र' के प्रति प्रकाशक-पाठक की यह उपेक्षा, यह उदासीनता यो ही नही

हो सकती। प्रकाशक-पाठक इतने न निर्मोही है और न अकृतज्ञ ही। उस का भी कोई कारण होगा। होगा क्या, यही है।

बस यही हमारे 'समर्पण पत्र' पर कुछ लिखने की, कुछ विचार करने की प्रेरणा का मूल उत्तर है।

हमने उपर्युक्त विवेचन से निचोड़ निकाला कि 'समर्पण पत्र' लेखक की किसी के प्रति हृदय में उत्पन्न 'भावना' का प्रतीक है जो शब्दों द्वारा वह इस माध्यम से प्रकट करता है और जिसे जग देखे, वह व्यक्ति देखे, और उन्हें देखते, देख कर 'समर्पक-लेखक सन्तुष्ट व प्रसन्न होता रहे। अब हम देखते है कि 'समर्पण पत्र' कई अवयवों से निर्धारित होता है, और उन की गिनती की सख्या तीन ठहरती हैं--

१. पात्र--जिसे समर्पण किया जाता है।

२. भावना--लेखक का वह मनोविकार जिस से अभिभूत हो कर वह समर्पण करता है।

३. माध्यम--पात्र के प्रति (समर्पण की) प्रेरक भावनाओं के द्योतक 'समर्पण पत्र' में प्रयुक्त शब्द।

आइए हम एक-एक अङ्ग को ले कर उस पर विचार करते हुए अपने गन्तव्य तक पहुंचें।

पात्र

कुछ एक ग्रन्थों को जिन में 'समर्पण पत्र' दिए गए हैं, एकत्र कर के यदि हम उन का आद्योपान्त तथा सूक्ष्म-गंभीर अध्ययन करें तो हमें समर्पण के पात्र एक तरह के नहीं कई श्रेणी के मिलेंगे। कई वार तो उन की न जाति मिलती है, न स्वरूप न नाम, न गुण, न स्वभाव, न कोई कर्म ही। कभी वह एक व्यष्टि है तो कभी समष्टि, कभी स्त्री जाति है तो कभी पुरुष जाति, तो कभी-कभी न स्त्री न पुरुष फिर भी जाति है। कभी वह जड़ है, कभी जङ्गम। कभी वह शिशु है, तो युवा है, तो कभी वृद्ध। और भी वह यत सब कुछ भी न होकर अमूर्तरूप-भावना रूप ही रहता है। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं--कहीं समर्पण एक मित्र को किया गया है, कहीं गुरु जन, कहीं माता-पिता को तो कहीं प्रियतमा को और अपने नन्हें मुन्ना-मुन्नियों को। जीवित ही नहीं मृत व्यक्ति भी इस के पात्र बना करते हैं। अधिकांश तो दिवङ्गत ही! यह समर्पण के बलआतिमय जनों तक ही सीमित है। आप कभी-कभी हरगिज न समझ बैठें, नहीं तो कई उदारवेत्ता 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' की उदात्त भावना वाले समर्पक के प्रति यह भारी अन्याय, अत्याचार होना गुरुतर अपराध भी हो सकता है तो कई वार अपने परिवार से अन्य व्यक्तियों जैसे--नेता, कवि, विचारक, जादूगर, सत्ता सौदागर, दानी आदि को भी समर्पण का अधिकारी बनाया जाता है।

व्यक्ति ही नहीं कभी-कभी किसी जाति अथवा वर्ग को भी समर्पण का विषय (पात्र) बनाया जाता है। यह जाति-वर्ग भी आगे चल कर कई वर्गों में, उप वर्गों में विच्छिन्न हो कर अधिकारी के रूप में हमारे समक्ष आता है। कभी हम देश अथवा राष्ट्र को भी इस का पात्र बनते देखते हैं, फिर चाहे वह स्वदेश हो अथवा स्वदेश को मिला कर समस्त विश्व।

कभी-कभी पात्र अमूर्त रूप व विचित्र रहने हैं जैसे--किसी की 'स्मृति को', 'युवकों के उत्साह को', अथवा उन की 'जवानी को' या फिर शोषित वर्ग की 'जागृति', 'साहस', इस के बाद की पाण्डुलिपि साथ नहीं भेजी गई। प्रगति आदि किसी भावना को। कहीं-कहीं वह 'दिल जले की आह' तो कहीं पीड़ित की कराह, अथवा असहाय के आंसू बनता है। गिनाएं कहां तक! थोड़ में कहो तो कह सकते है समूचा विश्व और उस के कार्य के समूचे पदार्थ सभी 'समर्पणपत्र' के अधिकारी बनते है और बन सकते हैं। अन्तर केवल भावना का है वह कितनी उदार है अथवा अनुदार संकीर्ण है अथवा विस्तृत!

'समर्पण पत्र' को पात्र के विषय में यदि हम सब कुछ मिला कर संक्षेप में तथा और अधिक स्पष्ट रूप से जानना चाहें तो हमारा वह रूप कुछ निम्न प्रकार होगा--

१. व्यक्ति, पारिवारिक—मां, बाप, भाई आदि पत्नी, प्रियतमा, शिशु, पुत्र आदि ।
अन्य—नेता, विचारक,गुरुजन आदि ।
सखा, दानी आदि, अन्य ।
२. जाति (वर्ग)—उच्च पूँजी-पति, मठाधीश, शसित्रक आदि । मध्यम,मध्यविन्तका समाज ।
निम्न-शोषित–पीड़ित किसान, मज-दूर, हरिजन आदि ।
३. देश— स्वदेश, अन्य देश, विश्व ।
४. भावना-दशा—उच्च-उदारता, उत्साह, जागृति आदि
मध्यम-स्मृति, राग,कर्मशीलता आदि
निम्न-द्वेष, मोह, नीचता आदि ।

भावना

भारतीय अथवा विदेशी विश्व कोषों में समर्पण के अन्तर्गत अर्थ देते हुए जिस भावना का उल्लेख मिला वह हमें किसी भी प्रकार नहीं जंचा । जचता कैसे वहां तो मक्खी पर मक्खी मारी गई है, उस की पूंछ-मूंछ अथवा पर की खाल निकाल कर नहीं देखा गया, गल्ती यहीं और यहीं पर हो गई । वरना विश्व के विश्व-कोष बड़े ही प्रामाणिक माने जाते हैं माने क्या जाते असल में होते ही हैं त्रुटि तो भगवान के काम में भी निकालने वाले निकाला ही करते हैं । सो कोषों में जो 'समर्पण' का अर्थ दिया गया है वह सब मिला कर इस प्रकार है—"सम्यक् प्रकार से अर्पण, किसी को कोई चीज आदरपूर्वक भेंट करना । दान देना ।" एक भारतीय विश्वकोषकार कुछ विशेष कहते लिखते हैं—प्रतिष्ठापूर्वक देना । जैसे वे यह पुस्तक किसी राजा या रईस को 'समर्पण करना चाहते है । हमने 'प्रतिष्ठा' का अर्थ देखा तो लिखा था—"गौरव, मान-मर्यादा प्रख्याति-प्रसिद्धि, यश-कीर्ति, आदर-सत्कार ।"

हमने सोचा भारतीय कोषकार स्वतन्त्र होने पर भी पिछली अंग्रेजों की दो सौ साल की गुलामी के कारण बुद्धि कुण्ठित होने से कदाचित् ठीक-सही तौर पर न सोचे-लिख सके हों, लाओ, आजाद व आला लोगों की दिमागी हरकत भी देख लें कि कोई काम को बात मिले । पर, पढ़ कर, न हम उन की पीठ पर हाथ रखने लपक सके न,अपनी छाती पीट सके,न माथा सहला सके दोनों हाथों के बीच हमारा सर आप ही आप आ गया और हम बैठे सोचने लगे कि हम बुद्ध हैं कि हमारा दिमाग फेल हो गया है कि यह हमें चेलेंज है कि लिखा था डेडीकेशन—" किसी पुस्तक आदि के पूर्व जोड़ा हुआ वह उल्लेख (पत्र) जो किसी व्यक्ति विशेष को सम्बोधन किया गया हो,जिस का कि (मुख्य) ध्येय संबोधित व्यक्ति की संरक्षता प्राप्त करना होता है ।

अब इन सब अर्थों से लगता है कि 'समर्पण' करते हुए लेखक का भाव केवल पात्र के प्रति प्रतिष्ठा केवल दान उस का गौरव-गान, अथवा उस की सरक्षता प्राप्त करना ही रहता है । यह बात पात्रों के विवेचन से तो आप जान ही गए होंगे कि समर्पण का अधिकारी चाहे वह विदेशी कोषकारों का व्यक्ति विशेष हो, और चाहे भारतीय कोषकारों का राजा अथवा रईस, केवल वही नहीं होता । व्यक्तियों में शिशु भी रहते हैं, प्रियतमा भी, जिनके प्रति स्नेह-प्रेम का भाव रहता है । गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव होता है । दानी, राजा-रईस के प्रति सम्मान भावना रहती है, किन्तु उस का कोप व भय लिये हुए । गुरुजन अथवा ईश्वर के प्रति जो श्रद्धा भक्ति है उस में निर्भयता के कारण हृदय का, आनन्द का मिश्रण है । इधर, राजा-रईस के प्रति भय के कारण लोकाचार एवं स्वार्थपन का पुट दिया रहता है । इसी प्रकार की निम्न वर्ग के प्रति अर्थात् दीन-दुखियों के प्रति किया गया समर्पण दया तथा करुणा भाव का द्योतक है, जो अत्यन्त पवित्र व सराहनीय है । यद्यपि, कई दूषित मनोवृत्ति वाले उसे भी अपने स्वार्थ का साधन बनाते हैं किन्तु ऐसे लोग अपवाद कहे जायेंगे, वैसे हमें किसी की नियत पर शक नहीं करना चाहिये ।

व्यक्ति-विशेष अथवा राजा-रईस के अतिरिक्त

व्यक्ति तथा जाति देश एवं कोई भावना-स्थिति विशेष भी समर्पण के पात्र हैं यह भी विवेचन से स्पष्ट व सिद्ध है। अब विश्व कोषकार अपने कोषों को पलट दें। यही कहने को जी चाहता है। आप भी साथ हैं न ?

'समर्पण एक श्रृङ्गारी वस्तु है। आप आश्चर्य न कीजिए, मेरी अल्पज्ञता कह कर मुझ पर हसिए भी नहीं। पहले सुनिए फिर निर्णय दीजिए। तो मैंने कहा 'समर्पण-पत्र'श्रृङ्गार रस से परिपूर्ण रहता है। यह एक दान है,दान में राग की भावना रहती है। राग को रति कहते हैं। रति स्थायी भाव है श्रृङ्गार का। रति भाव ही विभाव, अनुभाव, संचारी भावों से अंकुरित पुष्पित तथा पुष्ट ही कर श्रृङ्गार रस रूप में फलिभूत होता है। साहित्य शास्त्री हमारे गवाह हैं। रति नाम प्रेम का है। प्रेम पांच प्रकार का माना गया है, देखिये—सानुराग, सौहार्द, भक्ति और वात्सल्य। प्रेम पांचविधि कहत हैं कार्पण्यवंकल्प।

खुलासा इस तरह जानिये—

१. सानुराग—श्रृङ्गार (स्त्री) सम्बन्धी प्रेम (दाम्पत्यप्रेम)।
२. सौहार्द—स्वजन तथा परजन पर प्रीति (मैत्री)।
३. भक्ति—छोटों का बड़ों के प्रति प्रेम (श्रद्धा)।
४. वात्सल्य—बड़ों का छोटों के प्रति प्रेम (स्नेह)।
५. कार्पण्य—दुःख से दुखित हो कर प्रेम (दया, करुणा)।

साहित्य शास्त्री यह भी बताते हैं कि 'रस' नौ हैं और वह भाव, जिन्हें वह अपनी भाषा में स्थायी-भाव कहते हैं, तथा जिन के परिणाम यह 'रस' हैं की संख्या भी नौ ही है। जैसे—

१. रति—(स्त्री पुरुष का) प्रेम भाव।
२. हास—अंगादि विकारों द्वारा प्रफुल्लता।
३. क्रोध—अपराधी को दण्ड देने की उत्तेजना देने वाली मनोवृत्ति।
४. उत्साह—दान, सूक्षा, आदि से उत्तेजित होने वाली वृत्ति।
५. भय—अनिष्ट की आशंका।
६. जुगुप्सा—घृणा, लज्जा।
७. विस्मय—आश्चर्य विमूढ़ता।
८. शोक—वियोग की व्याकुलता।

इन्हीं भावों के परिणाम स्वरूप उन्होंने नव रस कहे हैं (जैसे—श्रृङ्गार, हास्य, करुण, वीर, अद्भुत, वीभत्स, भयानक, रौद्,करुण,शांत)। किन्तु कहा है—

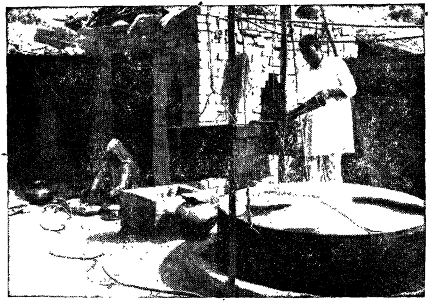
प्रकृति पुरुष-श्रृङ्गार में, नौ रस को संचार।
जैसे मीठे प्रकाश में घटत प्रकास-प्रकाश॥

और इ० 'रसराज' इसी लिए कहा गया है कि रति (प्रेम-राग) का सम्बन्ध इन सब के साथ किसी न किसी प्रकार जुड़ा ही है। कुछ उसी तरह जैसे किसी मौजी ने कहा था—

बदनाम होंगे तो क्या ! नाम न होगा ?

★

- भारत में बड़ी दीवार-घड़ियां बनाने वाले तीन कारखाने हैं, जिन की उत्पादन-क्षमता इस समय लगभग २८,००० घड़ियां प्रतिवर्ष है।
- १९५५ मे भारत से ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका को ५ लाख ३३ हजार रुपये के मूल्य की फ़िल्मों का निर्यात किया गया।



गांव की एक महिला गोबर गैस की ज्वाला पर भोजन पका रही है। बांई ओर गोबर गैस का उपकरण दिखाया गया है।

गोबर से गैस

श्री रामेश बेदी

भारतीय कृषि-अनुसन्धान संस्था ने निरन्तर किए गए परीक्षणों से एक विधि ज्ञात की है जिस से गोबर में से ईंधन और खाद दोनों ही प्राप्त किए जा सकें। इन अनुसन्धानों ने यह बताया है कि ताजे गोबर को जब बन्द पात्र में सड़ने दिया जाता है तो एक गैस प्राप्त होती है जिसे मिथेन कहते हैं। इसे जलाया जाय तो नीली ज्वाला में जलती है और ताप भी देती है। अन्धेरे को दूर करने के लिए यह प्रकाश का स्रोत है। रसोई की तथा दूसरी ताप सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह बढ़िया आग भी है। आधा सेर गोबर से एक घनफुट गैस निकलती है। एक किसान के पास यदि चार से छह तक पशु हैं तो वह प्रति दिन लगभग सौ घनफुट मिथेन प्राप्त कर सकता है। इस परिमाण द्वारा चार-पांच जनों के एक औसत परिवार का भोजन मजे में पक जायगा। इस अन्वेषण की एक बड़ी उपयोगिता इस बात में निहित है कि गोबर में विद्यमान वे सब तत्व जिन के कारण उत्तम खाद बनता है, सब वैसे के वैसे ही बने रहते हैं। गैस निकल जाने के बाद प्राप्त अवशेष वैसे ही बढ़िया खाद का काम देता है जैसा बिना गैस निकाला गोबर।

गैस निकल गए गोबर में कई विशेषताएं हमारा ध्यान खींचती हैं। यह मक्खियों को आकृष्ट नहीं करता। दुर्गन्ध नहीं फैलाता। इसलिए गैस पैदा करने वाले उपकरण से निकलने के बाद गीले गोबर को

तुरन्त खेतों में फैलाया जा सकता है । खाद बनाने के लिए इसे बन्द गड्ढों में सड़ाने की आवश्यकता नहीं होती ।

हमारे देहातों में इस आविष्कार का परिचलन एक क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा । सहकारी प्रयत्नों से हर गांव में गोबर गैस के उपकरण लगाए जा सकते है । सड़कों व गलियों के प्रकाश की समस्या को दूर करने में इस से बड़ी सहायता मिल सकती है ।

इस उपकरण में धातु का एक ढोल रहता है जिस का व्यास लगभग पांच फीट और ऊंचाई चार फीट होता है । पन्द्रह फीट गहरे कुएं के ऊपर यह मुंधा रखा जाता है । इस कुएं में गोबर डाला जाता है । सड़ांद से पैदा हुई गैस ढोल में जमा होती है । एक नली द्वारा यह रसोई में ले जा कर जलाई जाती है ।

हमारे देश की प्रगति

इस समय हमारे देश में शिक्षित धात्रियों की बहुत कमी है । प्रति ५० ० की आबादी के पीछे एक नर्स और एक मिडवाइफ़ की आवश्यकता है ।



द्वितीय पंचवर्षीय योजना में धात्री सेवाओं के लिए छह करोड़ रुपया रखा गया है ।

० केन्द्रीय सरकार ने विभिन्न राज्यों के गोसदनों को अब तक ३ लाख ३६ हज़ार रुपये की आर्थिक सहायता मंज़ूर की है ।

० जनवरी, १९५६ में भारत की कपड़ा-मिलों में कुल मिला कर २०२६०१ करघे लगे हुए थे । जनवरी, १९५५ में इन की संख्या २०२७१४ थी ।

० आजकल अफ्रीका के १३७ छात्र भारत में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । इन में से १९ छात्र हिन्दी पढ़ रहे हैं ।

गोरक्षा में गो-सदन का महत्व

श्री कृपाल सिंह एम. ए. बी. एस. सी.

'भारत में गाय ही मनुष्य की सब से निकटतम साथी है। वह धन-धान्य की प्रदात्री है और उस से हमें न केवल दूध मिलता है वरन् कृषि-कार्य भी उसी की सहायता से सम्भव होता है। गो मूर्तिमती करुणा है। वह सरल पशु करुणा से ओतप्रोत दिखाई देता है। गाय की रक्षा का अर्थ है जगन्नियन्ता के बनाये सभी मूक जीवों की रक्षा। गो-संरक्षण सम्पूर्ण जगत् के लिये हिन्दुत्व की बहुत बड़ी देन है।

——महात्मा गांधी।

मनुष्य के साथ गाय का सम्बन्ध पुराने जमाने से चला आया है। ऋग्वेद में गोमाता की स्तुति करते हुए कहा गया है——

यन्नियाने न्ययेन सज्ञाने यत् परायणे।
आवर्तनं निवर्तनं यो, गोपा अपितं हुवे॥

अर्थात् मैं गो सहित गोष्ठ की प्रार्थना करता हूं। गौओं के गृह आने की प्रार्थना करता हूं। गो-सम्मेलन की भी प्रार्थना करता हूं। चर कर उन के घर आने की प्रार्थना करता हूं। गोपाल की प्रार्थना करता हूं।

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में तो मनुष्य के साथ गाय के सम्बन्ध को एक विशेष स्थान प्राप्त है। गाय भारत के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन की आधार-शिला के रूप में सदैव सम्मान पाती रही है। संस्कृत ग्रन्थों में अनेक स्थलों पर देवी देवताओं से भी कहीं अधिक गोमाता की अभ्यर्थना की गयी है। उपनिषद् में वर्णित सत्यकाम बालक की कथा तथा पद्म-पुराण के पाताल खंड में राजा ऋतंभर की गाथा गो-सेवा की भावना से अनुप्राणित है। धार्मिक विश्वास, संस्कारों एवं विचारों में भिन्नता होते हुए भी गो के प्रति सब ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। गाय के लिये आस्था तथा भक्ति-भावना हमारी विभिन्नताओं में भी एकरूपता की प्रतीक है। चार्वाक् के समान नैतिकता विहीन दार्शनिक ने भी गोमाता के प्रति, अपनी सच्ची भक्ति प्रकट की है। 'ब्रह्मण धर्ममय सुत, जातक ग्रंथ', 'उपासक दशांग-सूत्र', आदि ग्रन्थों में जिस सम्मान से गाय गोमाता का उल्लेख है, वह यह प्रमाणित करता है कि शैव ब्राह्मण तथा शाक्त सभी गोभक्त थे।

पुराने काल में किसी व्यक्ति की समृद्धि का अनुमान इसी बात से लगाया जाता था कि उस के पास कितना गोधन है। आज भी बहुत से स्थानों में कृषक के वैभव का अनुमान उस की भूमि तथा अन्य वस्तुओं से नहीं होता है, वरन् उस के गोधन द्वारा होता है। यह साधारण मापदण्ड वास्तव में उपयुक्त भी है, यदि यह ध्यान में रखा जाय कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषक भूमि तथा पशु (गोधन) तीनों में एक गहरा सम्बन्ध है, जैसे कि इस प्रसंग में आगे चल कर बतलाया जायेगा। भारतवर्ष की अर्थ-व्यवस्था में जितना महत्वपूर्ण स्थान कृषि व्यवसाय का है, उस से भी अधिक गाय का है, क्योंकि वही कृषि व्यवसाय की रीढ़ है तथा हमारे जीवन के मूल व्यापारों में संबन्धित है। कुछ वर्ष पूर्व की गयी पैमाइश के आधार पर सारे देश की स्थिति को आंकते हुए भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने यह पता लगाया कि हमारे पशुओं तथा उन के पदार्थों से होने वाली आय, फसलों से प्राप्त होने वाली आय के बराबर या उस से अधिक है। पशुओं से होने वाली वार्षिक आय निम्न तालिका से स्पष्ट हो जाती है——

दुग्ध तथा दुग्ध पदार्थ	८००	करोड़ रुपये
जुताई तथा कृषि श्रम	१२००	,,
यातायात आदि	३००	,,
गोश्त	१२०	,,
खाल हड्डी आदि से	५०	,,
खाद के लिये गोबर आदि	१०००	,,
योग	३४७०	करोड़ रुपये

उपरोक्त तालिका से गाय का मनुष्य के आर्थिक जीवन तथा कृषि से सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है ऋग्वेद में गाय को मां तथा उस के बछड़े या बैल को पिता कहा गया है। कृषि व्यवसाय की बैल ही मशीन है। इन्जन ट्रैक्टर, मोटर आदि कई गुण निहित हैं। खेत का जोतना, सिंचाई करना, फसल की मडांई करना, उसे ढोकर मण्डियों में ले जाना आदि सब बैल पर निर्भर है। जिस किसान का बैल मरा तो उस की खेती बारी चौपट। खेती का कोई कार्य बिना उस की सहायता लिये नही चल सकता। हमारे देश में जहां पर किसान की जोत ढाई एकड़ से अधिक भूमि नहीं है तथा जहां का किसान साधन हीन है, मशीनों द्वारा खेती सम्भव नही है। यही नहीं कृषि से सम्बन्धित अन्य व्यवसायों में भी बैल की जरूरत पड़ती है, जैसे तेल पेलना, गाड़ी खींचना, चीजों की ढुलाई करना आदि। इस प्रकार भारत की अधिकतर कृषक जनता का जीवन निर्वाह बैल पर ही निर्भर है और प्राचीन वेदों का बैल को बाप कहना ठीक है।

उपरोक्त कारणों से गाय हमारी संस्कृति का एक अङ्ग बन गई है धार्मिक प्रवृत्ति वाले भारतीयों ने इसे धार्मिक रूप भी दे दिया और गाय को इन्हीं कारणों से हिन्दुओं ने मां का स्थान दिया है। गाय से हमें दूध, दूध से बने पदार्थ, कृषि के लिये बैल, गोबर आदि उस के जीवन काल में प्राप्त होते रहते हैं तथा मरने पर वही अपना चमड़ा देकर मनुष्यों की सेवा करती है। हमारे सभी महापुरुषों ने धार्मिक ग्रन्थों में गोवंश की तथा उससे होने वाले सभी लाभों के विषय में चर्चा की है। देश के महापुरुषों के जीवन में सम्भवतः इन्हीं आधारों से गो सेवा के परम आदर्श मिला करते हैं। यहां तक कि श्रीकृष्ण जी को भी गो सेवा करने के आधार पर ही गोपाल या गोविन्द कहा जाता है।

बड़े दुःख की बात है कि जिस भारत में गाय को माता माना जाता था वहां आज गोवंश की दशा बड़ी चिन्ताजनक है पशुओं के कद छोटे होने लगे हैं, बैलों के काम करने की शक्ति क्षीण हो गई है और वे रोगों से शीघ्र ग्रसित हो जाते हैं। इन की विभिन्न जातियां खराब हो गई हैं। गोवंश की अवन्नति यहां तक हो गई है कि उस भारत में जहां किसी समय दूध की नदियां बहती थीं आज कल उस देश की गाय प्रति दिन औसतन लगभग एक सेर दूध के हिसाब से देती है। इस प्रकार आज गोवंश की बहुत ही क्षीण दशा है।

इस क्षीण दशा के कई कारण हैं। मेरे विचार में सब से बड़ा कारण रोगों का बढ़ना है। हमारे यहां के पशुओं में जितना रोग फैलता है इतना संसार में कहीं भी नहीं है। रोगों में भी संक्रामक रोगों की संख्या बहुत अधिक होती जा रही है। हमारे देश में रोगों के रोकने का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं है। इस गोवंश का प्रति वर्ष रोगों से बहुत ह्रास होता है।

गोधन की हीन दशा होने का एक मुख्य कारण गोवध भी है। पिछले बहुत सालों से देश अंग्रेजों के आधीन था। उन्होंने अपनी अंग्रेजी सेना के लिए मांस की आवश्यकता की पूर्ति के लिये गो तथा उस की संतति का वध बे रोक-टोक होने दिया। जिस से उपयोगी पशुओं की कमी हो गई और बेकार तथा बिमार व कमजोर पशुओं की संख्या बढ़ गई।

किसानों की तथा और लोगों की दरिद्रता के कारण गो के पालन-पोषण की उचित व्यवस्था न रही और उन को उचित आहार मिलना बन्द हो गया। दूसरे चरागाहों की भूमि की कमी होने के कारण पालन-पोषण की समस्या और भी जटिल हो गई। इस के फल स्वरूप गोधन से दूध की उत्पत्ति कम होने लगी और गाय आर्थिक दृष्टिकोण से बजाय लाभकारी के हानिकारक ही गई। इस से बेकार तथा अनुपयोगी पशुओं की संख्या में दिन पर दिन वृद्धि होने लगी।

इसी प्रकार और भी बहुत से कारण हैं जिन से सिद्ध होता है कि हमारी गोमाता की प्रतिदिन हीन दशा होती जा रही है। यदि इस की दशा सुधारने के·

प्रयत्न न किये गये तो कुछ वर्षों में गोवंश की बहुत ही हीन दशा हो जावेगी। इस लिये आज प्रत्येक भारतीय के सामने गो रक्षा का प्रश्न है। अब तक भारत एक पराधीन देश था और इस लिये गो-रक्षा का कोई कार्य करने में असमर्थ था। परन्तु आज वह स्वतन्त्र है। और यही कारण है कि देश में गोरक्षा तथा पशुधन की उन्नति करने के हेतु सरकार बहुत से कार्य कर रही है।

इस में कोई सन्देह नहीं कि गाय भारतीय सभ्यता की निशानी है और उस की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का पहिला कर्तव्य है। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है कि 'अट्टनया पन्याहिं' अर्थात् हे पुरुष ! तू इन पशुओं की रक्षा कर। जिस से तेरी रक्षा होवे। महर्षि जमदग्नि तथा वसिष्ट ने गो रक्षा के लिये अहिंसक तरीके पर अपने प्राणों तक की बाजी लगाई। चक्रवर्ती राजा दिलीप ने गायों को चरा कर केवल गो सेवा ही नहीं की बल्कि गो-रक्षा के लिए अपने प्राणों तक को बाजी लगाने को तैयार हुए। महर्षि च्यवन ने अपने शरीर का मूल्य राजा नहुष का चक्रवर्ती राज्य नहीं एक गाय ही निश्चित किया था। भगवान श्रीकृष्ण की गो सेवा तो प्रसिद्ध है ही। महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, गुरु गोविन्दसिंह, सन्त कबीर, गोस्वामी तुलसीदास जी, चैतन्य महाप्रभु, महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, पण्डित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी तथा देश के अन्य महापुरुषों ने गोरक्षा का जो महत्व भारतीय जनता के सम्मुख रखा है वह हमारे लिये आदर्श है। इस लिये हर व्यक्ति को गो रक्षा के प्रत्येक प्रयत्न को सफल बनाने की चेष्टा करनी चाहिये।

गो रक्षा का सर्वोत्तम उपाय जो मेरे विचार में आता है वह है गो-सदन। गो-सदनों की स्थापना से गो-रक्षा के सभी प्रयत्न सफल हो जायेंगे। गो रक्षा के और भी बहुत से उपाय हैं। परन्तु मेरे विचार में यह उपाय सब से अच्छा है, क्योंकि वे सभी उपाय जो इस के अतिरिक्त किये जाते हैं इस के अन्तर्गत आ जाते हैं। मैं अब यह बता देना उचित समझता हूं कि गो-सदन क्या हैं ? जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि हमारे देश के पशुओं की वर्तमान हीन दशा का सब से बड़ा कारण यह है कि वृद्ध, बेकार और अनुत्पादक पशुओं की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। ऐसे पशुओं के रखने से न तो दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होती है और न उस की सन्तति खेती आदि के ही योग्य रहती है। हमारे यहां गो-वध बन्द होने पर यह समस्या और भी जटिल बन गयी है। अतः इन बेकार छुट्टे पशुओं को आबादी से दूर रखने के लिये केन्द्रीय गोसवर्द्धन परिषद् की सहायता से हमारी प्रदेशीय सरकार ने गो-सदन स्थापित करने की योजना बनाई है। इन गो-सदनों में छुट्टे तथा बेकार पशु रखे जावेंगे। जो कि जनता पर भार बने हुये हैं। फिलहाल दो ही गो-सदन स्थापित किए गये हैं। एक गरजियासोत जिला नैनीताल में और दूसरा मलगवां, जिला इटावा में है। भविष्य में ६ और गो-सदन खोलने का प्रबन्ध किया जा रहा है जिन में गढ़मुक्तेश्वर जिला मेरठ में, एक गुरुकुल कांगड़ी पुण्य भूमि जिला सहारनपुर में, और एक जिला कानपुर आदि में होंगे।

गोसदन का गोरक्षा में बहुत अधिक महत्व है। क्योंकि इन की स्थापना से गोरक्षा के अधिकतर उपाय सफल हो जाते हैं। सर्व प्रथम तो अपाहिज अनुत्पादक पशुओं की संख्या बढ़ गई है उन को रखने की समस्या हल हो जाती है। आजकल के पशु सड़कों की गलियों व सड़कों पर पत्तो तथा झूठन चाटते फिरते हैं, यातायात में इन के कारण बहुत असुविधा होती है। अनियमित प्रजनन कर के ये नसल को और खराब करते हैं। गोसदनों में इन्हें रख कर ये सब खराबियां दूर हो जायेंगी।

जो बेकार व अपाहिज पशु गो-सदनों में भेज दिये जाते हैं उनके पालन-पोषण का भार जनता से हट जाता है। जो चारा दाना आदि ये बेकार पशु

खाते हैं वह अब बच जाता है और स्वस्थ व उत्पादक पशुओं के लिये प्राप्त हो जाता है जिससे दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि हो जाती है और उस चारे दाने का भी जो पहिले बेकार पशुओं को खिलाया जाता था सदुपयोग हो जाता है।

गो-रक्षा के प्रयत्नों में गो-वध को बन्द करने का उपाय भी मुख्य है। परन्तु यदि गो-वध न किया जाय तो बेकार पशुओ की संख्या में वृद्धि होती है। दूसरे गो-वध से हानि यह है कि जो अच्छे और बढ़िया पशु होते हैं उनका वध हो जाता है और उत्पादक व अच्छे पशुओं की संख्या घट जाती है। गो-सदन की स्थापना से ये दोनों बातें दूर हो जाती हैं। गो-वध बन्द हो जाने के पश्चात् जो बेकार पशुओं की संख्या में वृद्धि होगी तो उनकी समस्या उनको गो-सदनों में भेज कर हल हो जाती है। दूसरे जब गो-वध ही नहीं होगा तो अच्छे व उत्पादक पशुओं का वध भी नहीं होगा। जो बेकार व अनुत्पादक पशु होते हैं वे खुले छुटे रहने के कारण आवारा फिरते हैं और फसलों को उजाड़ते फिरते हैं। जब उनको गो-सदनों में भेज दिया जावेगा तो उनसे होने वाली फसलों की यह हानि भी बच जावेगी।

अब जो बेकार तथा अपाहिज पशु मरता है तो उसको बहुधा आबादी के पास नदी नालों के किनारे या आस-पास के जंगल में यों ही छोड़ दिया जाता है। बहुत हुआ तो उसकी खाल निकाल ली जाती है और मांस पिण्ड कौवों, गिद्धों, सियार और कुत्तों के लिये छोड़ दिया जाता है। इन लाशों की दुर्गन्ध बहुत दिनों तक वहां से गुजरने वाले व्यक्तियों को नाक बंद करके चलने को विवश करती है। इस गन्दगी तथा दुर्गन्ध से बहुत से रोग फैलते हैं जो दूसरे स्वस्थ पशुओं को रोग ग्रस्त कर देते हैं। गो-रक्षा का एक उपाय गो-धन को रोगों से बचाने का भी है। तो यह भी उपाय गो-सदनों से हल हो जाता है। क्योंकि वहां पर जो पशु अपनी मौत मरता है तो मरने के बाद उसका उचित प्रबन्ध हो जाता है। गो-सदन में ही चमड़े के कारखाने खोल दिये जाते हैं। जहां पर मरे पशुओं की खाल, सींग, बाल व खुर आदि का उचित उपयोग हो जाता है। इससे मरे पशु मरने के बाद भी मनुष्य को आर्थिक लाभ पहुंचाते हैं तथा बीमारी फैलने के कारण भी नहीं बनते।

गो-रक्षा का एक मुख्य उपाय यह भी है कि गोधन के गोमूत्र तथा गोबर को बेकार न जाने दिया जाय और इसका सदुपयोग करके जो लाभ गो-माता दे सकती है लिया जाय। इसके बारे में महा-भारत में भी लिखा है "लक्ष्मी मूत्रे पुरीषे तथा" अर्थात् गोबर और मूत्र में साक्षात् लक्ष्मी का निवास है। यह कथन केवल अलंकारिक ही नहीं है बल्कि यथार्थ में सही भी है क्योंकि कम्पोस्ट खाद (जो गो-मूत्र व गोबर से बनाया जाता है) में पौधों के तीनों आवश्यक अंग नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश विद्यमान होते हैं। यही धरती का बैंक है। इसमें गोबर, गो-मूत्र, कूड़ा या और भी जो कुछ किसान के पास धरती की अमानत हो प्रतिदिन नियमपूर्वक जमा की जाती है। जब-जब आवश्यकता पड़े इस बैंक में से लक्ष्मी रूपी गोबर, गो-मूत्र की खाद निकाल कर धरती की भेंट की जा सकती है और बैंक को फिर भर दिया जाता है। इस प्रकार जहां गो-सदन की स्थापना होगी वहां पर ऐसे के धरती के बैंक अर्थात् कम्पोस्ट बनाने का कार्य बहुत बड़े पैमाने पर चलाया जा सकता है और गो-रक्षा का यह लाभ भी इन गो-सदनों की स्थापना करके प्राप्त किया जा सकता है।

यहां पर यह भी आवश्यक है कि गो-सदनों की सफलता के लिये उनके विषय में संक्षेप में बता दिया जावे। गो सदनों को ऐसी जगह पर बनाया जाय जहां घास की अधिकता हो। वहां पर पशुओं के रहने के लिये बाड़े बनवाए जांय और उनकी देख रेख के लिये कर्मचारी रखे जांय जिनको पशु उपचार की शिक्षा दी गई हो। ★

अंग्रेजी-संस्कृत-हिन्दी शब्दकोष

[गुरुकुल कॉगड़ी विश्वविद्यालय से तय्यार किये जा रहे कोष का नमूना यहां दिया जा रहा है। इस से हमारे पाठकों को इस की उपयोगिता का ज्ञान होगा। इस सम्बन्ध में यदि कोई विद्वान् कुछ सुझाव देंगे तो उस का भी हम स्वागत करेंगे। --सम्पादक।]

English	संस्कृत शब्दाः	हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ
A. a (n)	१. आंग्लवर्णमालायाः प्रथमाक्षरम् । (बी० ग०) प्रथमं ज्ञातपरिमाणम् । (त० शा०) प्रथमकल्पितव्यक्तिर्वस्तु वा। (सं० शा०) पाश्चात्यसंगीतपद्धतौ स्वरविशेषः ।	१. अङ्गरेजी वर्णमाला का प्रथम अक्षर। (बी० ग०) प्रथम ज्ञातपरिमाण वा राशि। (त० शा०) पहला कल्पित व्यक्ति वा पदार्थ। (सं० शा०) पश्चिमी संगीतशास्त्र में स्वर विशेष।
A. an.	२. अनियतोपपदं यद् व्यंजनैः सह ए इति, स्वरैश्च सह ऐन् इति रूपेण प्रायः प्रयुज्यते ।	२. अनियत उपपद जो व्यंजनों के साथ प्रायः ए रूप में तथा स्वरों के साथ ऐन् रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
	३. (पु०) एकः। (नपुं०) एकम् । (स्त्री०) एका। (पु०) कश्चित्। (नपुं०) किंचित्। (स्त्री०) काचित्।	३. एक, कोई।
	४. प्रत्येकम् ।	४. प्रत्येक। यथा--
Twice a day.	प्रतिदिवसं द्विः।	दिन में दो बार।
Thrice a month.	प्रतिमासं त्रिः।	महीने में तीन बार।
	५. जातिवर्गादिसूचकम् ।	५. जाति अथवा वर्ग विशेष का सूचक।
Dog is an animal.	श्वा प्राणिविशेषः।	जैसे--कुत्ता एक प्राणी है।
A (prep.)	६. उपसर्गरूपेण क्वचित् प्रयुज्यते । यथा चतुर्थ्यर्थ--	६. उपसर्ग रूप में भी कहीं-कहीं ए का प्रयोग होता है। जैसे--चतुर्थी के अर्थ में
a-hunting	मृगयां कर्तुम्।	शिकार खेलने के लिये।
a-begging.	भिक्षां याचितुम्।	भीख मांगने के लिए।
	सप्तम्यर्थे यथा--	सप्तमी के अर्थ में यथा--
a-bed	शय्यायाम् ।	शय्या वा बिछौने पर,
a-board	पोतफलके।	जहाज के तख्ते पर,
a-shore	तीरे।	(समुद्रादि) के किनारे पर।
Al (Naut.)	(नौ०) प्रथमवर्गपोतः। (प्रचलितभाषायाम्)	(नौ०) लायड् के रजिस्टर में प्रथम श्रेणी का जहाज।(प्र०भा०)बहुत ही अच्छा,सब से उत्तम, आदर्श रूप। गु० म० बं० एक।
(adj.)	अत्युत्तमः, श्रेष्ठः, आदर्शभूतः।	

Aar. (n).	अन्तर्नदी ।	अन्तर्नदी—भूमि के अन्दर अन्दर बहने वाली नदी ।
Aard vark (n).	भूशूकरः—दक्षिण अफ्रीकादेशीयो वराह-सदृश एकः प्राणिविशेषः ।	भू-शूकर—दक्षिण अफ्रीका का सूअर जैसा एक चौपाया जानवर ।
Aard wolf. (n)	चित्रवृकः—दक्षिणाफ्रीकादेशीयो वृकसदृशो जन्तुविशेषः ।	चित्रवृक—भेड़िये की सी आकृति वाला एक जानवर ।
Aaron's beard (n).	वृद्धकूर्चो वनस्पतिवर्गविशेषः ।	वृद्धकूर्च—एक प्रकार के पौदों का वर्ग जो गमलों में बो कर छत, वृक्ष आदि से लटका दिए जाते है और जो दाढ़ी के समान आकृति के होते हैं ।
Aaronic (adj)	यहूदीमते प्रथममहापुरोहितविषयकम् ।	यहूदियों के बड़े पादरी से सम्बन्ध रखने वाला ।
Aaron's rod (n)	(वन०) प्रांशुको वनस्पतिवर्गविशेषः । (धर्म०) बाइबलग्रंथानुसारं यहूदीपुरोहितस्यैरनस्य चामत्कारिको दण्डः ।	(वन०) ऊँचे पुष्पित तनों वाले पौधों का एक वर्ग । (धर्म०) बाईबल के अनुसार यहूदी पुरोहित ऐरन का चमत्कार–पूर्ण डण्डा ।
Aasvogel (n).	गृध्रः । द्राक्षाघ्यः ।	गीध ।
Ab. (n).	यहूदी संवत्सरस्यैकादशो मासः ।	यहूदियों के वर्ष का ग्यारहवाँ मास ।
Ab (pref).	लैटिन उपसर्गः । अप दूरे, परे इति वाचकः ।	दूर परे, अलग वाचक लैटिन का उपसर्ग ।
Aba (n)	सीरियाप्रदेशीयमूर्णामयं वस्त्रम् ।	सीरिया देश का ऊनी वस्त्र ।
Aback (adv).	क्रिया विशेषणम्—पृष्ठतः इति वाचकम् ।	(क्रि० वि०) पीठ की ओर, पिछली ओर ।
Taken aback	चकितः, विस्मितः, परिस्तब्धः ।	आश्चर्यान्वित या हैरान । क० चकित । बं०–अवाक् ।
Abaction (n).	पशुचौर्यम्, पशुस्तेयम्, यूथहरणम् ।	पशुओं की चोरी ।
Abactor (n).	पशुचौरः, पशुस्तेनः ।	पशुओं की चोरी करने वाला ।
Abaculus (n).	(स्था० शा०) चित्रखर्परिका ।	(स्था० शा०) चित्रखर्परिका-एक प्रकार का खपरैल ।
Abacus (n)	(शि० शा०) गणनायन्त्रविशेषः, गोलकचतुरस्रम्, अंकगणकम् । (स्था० शा०) स्तम्भशीर्षतलम्, शीर्षफलकम् । (त० शा०) पदसमूहयंत्रम् ।	(शि० शा०) तारों पर मनकों या लट्टुओं के रूप में बच्चों को गिनती सिखाने का एक उपकरण । (स्था० शा०) स्तम्भशीर्षतल या खंभे के ऊपर लगाने का चौरस पत्थर । (त० शा०) पद-

		समह यंत्र अथवा शब्द समह दिखाने वाला एक यंत्र विशेष । ते० गणना यंत्रम् अथवा गणना फलकम् । मल० गणनोपकरणम् ।
Abaddon (n)	पातालम्, नरकः, विनाशस्थलम् ।	पाताल, नरक, विनाश का स्थान ।
Abaft (adv. pre.)	(क्रि० वि०) पश्चात्, प्रत्यक् (वै० सं०) अव्ययपदम् ।	जहाज की पतवार की ओर, पिछली ओर, पीछे ।
Abalienate (v. t.)	(विधि० शा०) अन्यस्मै संक्रम् प्रे० (संक्रामयति) क्रम्–पाद विक्षेपे, भ्वा० प० ।	(वि० शा०) किसी सपत्ति का अधिकार दूसरे व्यक्ति को देना।
Abalienation (n)	(वि० शा०) अन्यसंक्रमणम् ।	(वि० शा०) किसी सम्पत्ति का अधिकार दूसरे को देने का कार्य ।
Abandon (v. t.)	परि+त्यज्–भ्वा० प० (परित्यजति) ओहाक्-त्यागे–जुहोत्यादिः प० (जहाति) उज्झ् तुदादिः प० (उज्झति) अप+अस् दिवादिः प० (अपास्यति) मुच् तुदादि० प० (मुञ्चति) उत्+सृज् तुदादिः प० (उत्सृजति) ।	त्यागना, छोड़ देना,बन्द कर देना । क्रूरता या निर्दयता से छोड़ देना । ता० अलक्ष्यम् चेय । बं० परित्याग करा । मल० उपेक्षिक्क, त्यजिक्क, उत्सर्जिक्क । आ० त्याग करा ।
Abandon one self to despair.	नैराश्यप्रवाहे निमज्जनम् ।	निराशा के प्रवाह में बह जाना । अपनी भावनाओं को वश में न रखना ।
He was abandoned to his fate.	स दैवाधीनः कृतः । स दैवायत्तः कृतः ।	वह भाग्य पर छोड़ दिया ।
Abandon.	नियन्त्रणस्य संयमस्य वा परित्यागः ।	नियन्त्रण वा संयम का परित्याग ।
Desert.	मित्रपोष्यादिकं प्रति कर्त्तव्यपरित्यागः ।	मित्र, स्त्री आदि के प्रति कर्त्तव्य का परित्याग करना ।
Forsake.	सम्बन्धविच्छेदः ।	सम्बन्ध विच्छेद करना ।
Abandoned (adj)	परित्यक्तः पापात्मा, हीनः, भ्रष्टचरितः, उच्छृङ्खलः । 'त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टम्' इत्यमरः ।	त्यागा हुआ, हीन, दुष्ट, पापी, बदमाश । म० व्यसनासक्त, धर्मबाह्य, नीतिभ्रष्ट । क० भ्रष्ट, दुष्ट, विषयान्ध । बं०–लम्पट । मल० हीन, त्यक्त, परिवर्जित, उपेक्षित ।
Reprobate	घोरपापकरणाज्जनैर्बहिष्कृतः । घोरपापी ।	घोर पाप के कारण लोगों द्वारा बहिष्कृत ।

		क० परमपापी । तै० नीचातिनीच ।
Profligate	निर्लज्जतया पापाचरणे प्रवृत्तः, निर्लज्ज-पातकी ।	निर्लज्जतापूर्वक पापाचार में प्रवृत्त । क० विषय लम्पट । मल० दुष्ट, धूर्त, विषयी ।
Dissolute	परित्यक्तसर्वसंयमो दुराचारी, विषयान्धः ।	ऐसा दुराचारी जिस ने सारे संयम का त्याग किया हो । विषयान्ध । क० दुर्व्यसनी । तै० दुष्प्रवर्तनगल । म० भोगासक्त, विषयसुख निरत, इन्द्रिय तत्पर ।
Abandonment (n)	परित्यागः, उत्सर्गः, परित्यजनम् .	परित्यजन, परित्याग । गु० परित्याग । म० स्वसत्ता विमुक्ति । तै० सम्पूर्ण त्यागमु । क०–परित्याग । मल० त्यागम्, उत्सर्गम् ।
Abandonment of Claim	अधियाचनायाः परित्यागः, परित्यजनं वा ।	दावे का त्याग ।
Abase (v. t.)	अभि+भू० प०(अभिभवति) स्व स्थानात् नि+पत् प्रे० (निपातयति) लघु+कृ० तनादि० उ० प० (लघूकरोति, लघूकुरुते) अप+कृष्, भ्वा, प० (अपकर्षति) ।	मान घटाना, पद या मान की दृष्टि से नीचे गिराना, अनादर करना, जलील करना ।
Abasement (n)	अपकर्षः, मानभंगः, अभिभवः, अवज्ञानम्, अवमानम् ।	अनादर, अपमान, बेइज्जती । गु० म० क० मानभंग, अवज्ञा, हीनता, अपमान । मल० अवज्ञानम् ।
Abash. (v. t.)	ओलजि० तु० आ० (लज्जते) ह्री० जु० प्रे० (ह्रेपयति) त्रप्० भ्वा० आ० प्रे० (त्रपयति) ।	लज्जित करना, लजाना, शर्माना, शर्मिन्दा करना, घबरा देना, पानी पानी करना ।
Abaseed (adj)	लज्जितः, त्रपितः, व्रीडितः, ह्री–परिगतः, ह्रीणः, ह्रीतः । "ह्रीण ह्रीतौ तु लज्जिते" इत्यमरः ।	लज्जित, शर्मिन्दा, हयादार । क० लज्जित, भंगित । मल० व्रीडित । बं० सलज्ज ।
with an abashed countenance.	त्रपाधोमुखः ।	लज्जा से नीचे मुखवाला ।
Abashment (n)	लज्जा, त्रपा, ह्रीः, व्रीडा ।	लज्जा, शर्म, लाज, हया । क० लज्जे । मल० लज्जा, व्रीडा ।

साहित्य-परिचय

[समालोचना के लिये प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी आवश्यक हैं—सम्पादक]

ऑन दि वेदाज

लेखक—श्री अरविन्द। प्रकाशक श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी। पृ० ६६६, मूल्य १०)

श्री अरविन्द ने वेदों के विषय में विशेष अनुशीलन कर के 'आर्य' नामक त्रैमासिक पत्र में वेद रहस्य के नाम से एक लेखमाला कई वर्षों तक प्रकाशित की थी। उस में वेदों के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रहस्य बताये गये थे और सायणाचार्य तथा पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक अशुद्ध कल्पनाओं का सप्रमाण-निराकरण किया गया था। इसके साथ ही सिलेक्टेड हिम्स के नाम से अगस्त १९१४ से जुलाई १९१५-तक एक लेखमाला में श्री अरविन्द ने अनेक वैदिक-सूक्तों की व्याख्या की थी। हिम्स ऑफ दि अत्रीज के नाम से अगस्त १९१५ से दिसम्बर १९१७ तक एक लेखमाला में श्री अरविन्द ने मन्त्यादि विषयक अनेक वैदिक सूक्तों की व्याख्या की थी जिन में से अग्नि देवता के सूक्तों की व्याख्या हिम्स ऑफ दि-मिस्टिक फायर के नाम से पृथक् रूप में भी प्रकाशित की जा चुकी है।

अदर हिम्स के नाम से अन्य कई वैदिक सूक्तों की व्याख्या अगस्त १९१५ से जनवरी १९२० तक 'आर्य' में प्रकाशित होती रही। इस पुस्तक में श्री-अरविन्द के वेद विषयक इन सब लेखों और वैदिक-सूक्त व्याख्याओं के संग्रह के अतिरिक्त अन्त में ओरिजन ऑफ दि आर्यन स्पीच पर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख है जिस में पाश्चात्य भाषाविज्ञान की अनेक अशुद्धियों का निर्देश करते हुए आर्यभाषाओं के मूल पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार यह पुस्तक अंग्रेजी जानने वाले सुशिक्षित लोगों के लिये अत्यन्त उपयोगी हो गई है जिस से मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टि से वेदों का महत्व उनके हृदय पर अङ्कित होगा इस में कोई सन्देह नहीं।

श्री अरविन्द महर्षि दयानन्द की वेदभाष्य शैली के अत्यन्त प्रशंसक थे। इस पुस्तक के पृ० ३७ से ३९ तक उस के विषय में विवेचन करते हुए उन्होंने लिखा है कि तीसरी भारतीय सहायता तिथि में अपेक्षया कुछ पुरानी है परन्तु मेरे वर्तमान प्रयोजन के अधिक समीप है। यह है वेद को फिर से एक सजीव धर्मग्रन्थ के रूप में स्थापित करने के लिये आर्य-समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के द्वारा किया गया अद्भुत प्रयत्न। दयानन्द ने पुरातन भारतीय भाषा-विज्ञान के स्वतन्त्र प्रयोग को अपना आधार बनाया जिसे कि उसने निरुक्त में पाया था। स्वयं संस्कृत का एक महा विद्वान् होते हुए, उसने अपने पास जो सामग्री थी उस पर अद्भुत शक्ति और स्वाधीनता के साथ विचार किया। ......दयानन्द ने ऋषियों के भाषा सम्बन्धी रहस्य का मूल-सूत्र हमें पकड़ा दिया है और वैदिक धर्म के एक केन्द्र भूत विचार पर फिर से बल दिया है, इस विचार पर कि जगत् में एक परमेश्वर की सत्ता है और भिन्न-भिन्न देवता अनेक नामों और रूपों से उस देव की ही महिमा को पुकारते हैं। इत्यादि

अनेक वैदिक अलंकारों की आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक व्याख्या इस ग्रन्थ में की गई है, जिनको सायणाचार्यादि मध्यकालीन भाष्यकार तथा यूरुप के विद्वानों ने समझने में भूल की थी। अग्नि, इन्द्र, सोम, सूर्य, उषा, सरस्वती, वरुण, बृहस्पति इत्यादि देवताओं पर पर्याप्त विस्तृत विचार करते हुए और अनेक सूक्तों की व्याख्या करते हुए उनके क्रमशः Divine or illumined will, Divine mind, Intoxication of the Ananda, The Sun of the Superconscient Truth The Divine Dawn who is

(शेष पृष्ठ १२८ पर)

गुरुकुल समाचार

ऋतु-रङ्ग

दीपावली के बाद से करारा जाडा पड़ रहा है। दीपावली से दो दिन पूर्व ही अच्छी बारिश हो जाने से प्रकृति में शीत की मात्रा बढ़ गई थी। उक्त बारिश के कारण ही गेहूं, चने आदि की बुआई में पन्द्रह दिन का विलम्ब हो गया। वर्षा के वातावरण के कारण खांसी, जुकाम, श्लेष्मज्वर आदि का भी उपद्रव बना रहा। अब मौसम अच्छा है। हेमन्त ऋतु की अच्छी सर्दी पड़ रही है। पूर्व दिशा से आने वाली ढाढ़-पवने भी अपने जोर पर हैं। कुलवासियों का स्वास्थ्य अच्छा है।

विशेष व्याख्यान

श्री अरविन्द आश्रम पांडिचेरी के अन्तर्राष्ट्रिय विद्या-मंदिर में अन्तर्राष्ट्रिय विषयों के प्रोफेसर डाक्टर जय-होम स्मिथ (मूलतः अमेरिकावासी) महाशय ने गुरुकुल कांगडी की शरत्कालीन व्याख्यानमाला के सिलसिले में "शांति की साधना" विषय पर एक विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। आपने बतलाया कि विश्व में शांति स्थापना के उपायों पर अनेक महापुरुषों और विद्वानों ने गहन विचार-मंथन किया है। प्रभावशाली पुरुषों ने शांति-साधना के लिये अनेक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक योजनाएं प्रस्तुत की हैं। परन्तु विश्वशांति अभी तक एक चिन्तनीय समस्या बनी हुई है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक विख्यात समाज-शास्त्री इस दिशा में अपने गहरे चिन्तन और प्रयोगों द्वारा इस परिणाम पर पहुंचे है कि मानव जाति के संत, महात्मा और आध्यात्मिक महापुरुष अपनी तप-साधना द्वारा जीवन-विकास की जिस सात्त्विक उर्ध्वभूमिका और चित्तवृत्ति पर पहुंचते रहे हैं उसी प्रकार के चेतना-स्तर पर पहुंचे बिना मनुष्य व्यक्तिगत रूप में और सामाजिक रूप में शांति नहीं प्राप्त कर सकता। विद्वान् व्याख्याता महोदय की सम्मति में भारत के दार्शनिक शिरोमणि श्री अरविन्द जी अपनी योग-पद्धति से उसी प्रकार की ऊंची चेतना का साक्षात्कार कर रहे थे। उनकी साधना को हम अधिमानस की साधना कह सकते हैं। उसके द्वारा मनुष्य की चेतना का उर्ध्वीकरण संभव है और उसी के द्वारा मानव की आत्मा का दिव्य रूपान्तर हो सकता है। उस पद्धति से निश्चय से ही मानव व्यक्ति और समष्टि रूप में शांति लाभ कर सकता है। व्याख्याता महोदय ने यह भी सूचित किया कि असांप्रदायिक राज्य होते हुए भी भारत को अपने महापुरुषों द्वारा किये गये सफल आध्यात्मिक प्रयोगों का प्रचार और उनका-स्पष्टीकरण पश्चिम के राष्ट्रों के सामने करना चाहिये। जिससे भारत की साधना का लाभ अन्यराष्ट्र और व्यक्ति भी उठा सकें।

२४ नवंबर को उत्तर प्रदेशीय पशुपालन विभाग के संचालक श्री पी० जी० पाडे का पशुपालन की समस्या पर अनुभवपूर्ण व्याख्यान हुआ। विदेशों में पशुपालन की रीतियों के मनोहर उदाहरणों से भाषण-अधिक आकर्षक बन गया था। समस्त कुलवासियों ने दिलचस्पी से व्याख्यान सुना।

ज्ञानयात्री मंडलियाँ

दीपावली छुट्टियों में प्रतिवर्ष अनेक शिक्षण संस्थाओं के छात्र अपने गुरुजनों के साथ ज्ञानयात्रा के लिये निकल पड़ते हैं। पिछले दिनों निम्नलिखित संस्थाओं के छात्र गुरुकुल अवलोक के लिए आये।

१. प्रशिक्षण महाविद्यालय—भागलपुर।
२ विद्यामंदिर, कारवण, बडोदा।
३. जोडिया हाईस्कूल, जोडिया, सौराष्ट्र।
४. श्रौफ हाईस्कूल, बड़ोदा।
५. सरस्वतीमंदिर हाईस्कूल, अहमदाबाद।
६. वुडस्टाक स्कूल, मसूरी।
७. महाराष्ट्र शिक्षण मंडल, अहमदाबाद।
८. नीलरतन सरकार मेडिकल कालेज, कलकत्ता।
६. लॉ कालेज, अहमदाबाद।
१० हिन्दू इन्टर कालेज, नगीना, बिजनौर।
११. हरिपुरा गर्ल्स स्कूल, सूरत।
१२ नूतन सर्व विद्यालय, विसनगर; गुजरात।

१३ आयुर्वेद विद्यालय, उदयपुर।
१४ आयुर्वेद महाविद्यालय, बेगूसराय, बिहार।
१५ सैनिक स्कूल, देहरादून।
१६ आयुर्वेद महाविद्यालय, जयपुर।
१७ सरकारी कृषि विद्यालय, झांसी।
१८ सरकारी कृषि विद्यालय, इटावा।

वाक्स्पर्धा में विजय

मुजफ्फरनगर के डी० ए० वी० कालेज द्वारा आयोजित हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में गुरुकुल के प्रतिनिधि ब्र० नवेन्द्रकुमार और ब्र० प्रशांतकुमार विजयी हुए हैं और चांदी का विजयोपहार लाये है। वादविवाद का विषय यह था—'पंचशील द्वारा ही विश्वशांति सम्भव है।' इस स्पर्धा के साथ आशु-भाषण प्रतियोगिता भी शामिल थी। दोनों प्रकार की स्पर्धाओं में सब से अधिक अङ्क प्राप्त करने वाली संस्था को विजयचिह्न देना नियत किया गया था। सो नियमानुसार गुरुकुल के प्रतिनिधि ही दोनों में प्रथम आये और विजयोपहार के अधिकारी बने। बधाई है।

प्रेमोपहार

हिन्दी के प्रतिष्ठित उपन्यास लेखक श्री गुरुदत्त जी (दिल्ली) ने अपनी समस्त कृतियां (जिन का मूल्य कोई सवा सौ रुपये होगा) प्रेम-पूर्वक गुरुकुल के ग्रंथालय को भेंटस्वरूप प्रदान की हैं। श्री गुरुदत्त जी गुरुकुल के पुराने स्नेही हैं। सदा ही कुल के प्रति उनकी प्रीति रही है। समस्त कुलवासी उन के इस सात्विक और स्नेह-पूर्ण उपहार के लिए उन के धंश-वद और कृतज्ञ है।

अभिनन्दन

प्रतिष्ठित लोक-सेवक और कुल के सुयोग्य स्नातक श्रीयुत अमरनाथ जी विद्यालंकार पिछले दिनों पंजाब के आरोग्य-मन्त्री बनाये गये हैं। श्री अमरनाथ जी ने सन् १९२५ में स्नातक बनते ही पंजाब में लोकसेवा करने के लिए दीक्षित हो गए थे। वे पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय जी द्वारा संस्थापित लोक-सेवक संघ के सदस्य बने और सर्वात्मना लोकसेवा के व्रती बन गये। वे अर्थशास्त्र और राजनीति-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता है। सार्वजनिक जीवन में उन्होंने अपने शील, चारित्र्य और तप से अच्छी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता प्राप्त की है। कुलवासी उनकी इस यश.पूर्ण उपलब्धि पर उन का प्रेमपूर्वक अभिनन्दन करते हैं।

गोपाष्टमी

गोपाष्टमी के दिन गुरुकुलीय कृषि-विद्यालय के तत्वावधान मे एक गोप्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। उस में गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओ ने तथा समीपस्थ ग्रामो के किसानों ने अपनी बछडियां, बछड़े, बैल और गौएँ प्रस्तुत की थी। बढिया नमूने वाले कई गोपालकों को पुरस्कार दिए गए।

श्रद्धानन्द जन्म-शताब्दी

पाठकों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य सार्वदेशिक सभा ने इस वर्ष गुरुकुल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर कुलपिता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की जन्म-शताब्दी मनाने का निश्चय किया है। शताब्दी के देश व्यापी विविध आयोजनों में हमारी योजना गुरुकुल-पत्रिका का एक विशाल विशेषांक निकालने की है। इस में स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में तथा उन के कार्यकलाप के बारे में अधि-कारी विद्वानो, समाज व देश के नेताओ के लेख, कवि-ताएँ, संस्मरण आदि प्रकाशित किए जावेंगे। अपने कृपालु लेखकों से हमारी प्रार्थना है कि वे अपनी रच-नाएँ यथासम्भव शीघ्र भेजने की कृपा करें।

स्वामी जी के जीवन के विविध पहलुओं से संबद्ध फोटो, चित्र या स्कैच जिन महानुभावों के पास सुरक्षित हों वे हमे प्रकाशित करने के लिए भेज देंगे तो बड़ी कृपा होगी। यदि वे चाहेंगे तो चित्रों का उप-योग करने के बाद हम उन्हें सुरक्षित लौटा देंगे।

शोक-वार्ता

आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री स्वामी वेदानन्द जी के एकाएक अवसान का समाचार ज्ञान कर सब कुलवासी बहुत शोकित हुए। उन के सम्मान में गुरुकुल के सब विभाग बन्द कर दिये गये। आचार्य श्री प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति की अध्यक्षता में कुलवासियों ने एक शोकसभा कर के निम्नलिखित प्रस्ताव द्वारा उन की महान् सेवाओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के समस्त निवासियों की यह सभा गुरुकुल की स्वामिनी सभा के महामन्त्री और आर्य-जगत् के सुविदित विद्वान् श्री स्वामी वेदानन्द जी के अवसान पर अतिशय खेद प्रकट करती है। प्रशंसित स्वामी जी ने अपना समस्त जीवन विद्यानुशीलन, धर्मसेवा और लोकसेवा में व्यतीत किया था। वाणी और लेखनी द्वारा उन्होंने आर्य-समाज की कीमती सेवाएँ की थी। उन के उठ जाने से आर्य-जगत् में एक जागरूक विद्वान् और पुरुषार्थी मिशनरी का स्थान खाली हो गया है। कुलवासी उन की क्षति को अपूरणीय समझते हैं। आर्य संन्यासी के नाते समस्त जगत् ही उन का परिवार था। अतः आर्यजगत् के प्रति कुलवासी अपनी समवेदना प्रकट करते हुए भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह श्री स्वामी जी की दिवंगत आत्मा को शान्ति और सुगति प्रदान करें।

साहित्य-परिचय

१२५ पृष्ठ का शेष

bringer of illumination, Divine Word, who represents the stream of inspiration, that descends from the Truth consciousness, Power of wideness and Purity, The Power of Soul or the master of the creative word आदि अर्थ किये हैं जिन से वेदों के रहस्य समझने में बड़ी सहायता मिल सकती है।

श्री अरविन्द ने वेदों को ईश्वर प्रेरित पवित्र ज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। यद्यपि किसी-किसी वाक्य से पाठकों को यह भ्रम हो सकता है कि श्री अरविन्द के अनुसार ऋषि मन्त्रकर्ता है पर उन्होंने अन्यत्र इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'ऋषि सूक्त का वैयक्तिक रूप से स्वयं निर्माता नहीं था। वह तो द्रष्टा था एक सनातन सत्य का और एक अपौरुषेय ज्ञान का।

हम इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ का अभिनन्दन करते हैं जिस से अङ्ग्रेजी शिक्षित जनता के वेदविषयक अनेक अशुद्ध विचार दूर होंगे और उसे वेदों का महत्व ज्ञात होगा। यह दुःख की बात है कि जहां वैदिक सूक्तों की व्याख्या है वहां वेदमन्त्र देवनागरी लिपि में नहीं दिये गये। यद्यपि व्याख्या में कहीं कहीं रोमन लिपि में सम्पूर्ण मन्त्रों अथवा मन्त्रांशों को उद्धृत किया गया है। हमारे विचार में यह अच्छा होगा कि अगले संस्करण में वैदिक सूक्तों को देवनागरी लिपि में भी उद्धृत कर दिया जाय ताकि उन की व्याख्या मूल के साथ मिला कर पढ़ने में सुविधा हो। जब तक ऐसा नहीं हो सकता यह उत्तम होगा कि इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के परिशिष्ट के रूप में इस में उद्धृत वेदमन्त्रों का संग्रह प्रकाशित कर दिया जाए जैसे कि लाइफ़ डिवाइन में प्रकाशित संस्कृत वाक्यों का संग्रह पृथक् पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया गया था। हम समस्त अङ्ग्रेजी शिक्षितवर्ग में इस पुस्तक का प्रचार चाहते हैं।

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड।

स्वाध्याय के लिए चुनी हुई पुस्तकें

वैदिक साहित्य

ईशोपनिषद्भाष्य	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	२)
वेद का राष्ट्रिय गीत	श्री प्रियव्रत	४)
वेदोद्यान के चुने हुए फूल	श्री प्रियव्रत	४)
वरुण की नौका, २ भाग	श्री प्रियव्रत	६)
वैदिक विनय, ३ भाग	श्री अभय	२), २), २)
वैदिक वीर-गर्जना	श्री रामनाथ	॥=)
वैदिक-सूक्तियां	..	१॥)
आत्म-समर्पण	श्री भगवद्दत्त	१॥)
वैदिक स्वप्न-विज्ञान	..	२)
वैदिक अध्यात्म-विद्या	..	१।)
वैदिक ब्रह्मचर्य गीत	श्री अभय	२)
ब्राह्मण की गौ	श्री अभय	॥)
वेदगीताञ्जलि (वैदिक गीतियां)	श्री वेदव्रत	२)
सोम-सरोवर, सजिल्द, अजिल्द	श्री चमूपति	२), १॥)
वैदिक-कर्त्तव्य-शास्त्र	श्री धर्मदेव	१॥)
अग्निहोत्र	श्री देवराज	२।)

संस्कृत ग्रन्थ

संस्कृत-प्रवेशिका, १, २ भाग	॥), ॥=)
साहित्य-सुधा-संग्रह, १, २, ३ बिन्दु	१), १), १)
पाणिनीयाष्टकम् पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध	६), ६)
पञ्चतन्त्र (सटीक) पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध	२), २॥)
सरल शब्दरूपावली	।=)

ऐतिहासिक तथा जीवनी

भारतवर्ष का इतिहास ३ भाग	श्री रामदेव	६)
बृहत्तर भारत (सचित्र) सजिल्द, अजिल्द		७), ६)
ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार, २ भाग		॥)
अपने देश की कथा	श्री सत्यकेतु	२।=)
हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अनुभव		॥)
योगेश्वर कृष्ण	श्री चमूपति	४)
सम्राट् रघु	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१।)
जीवन की झांकियां ३ भाग	..	॥), ॥), १)
जवाहरलाल नेहरू	..	१।)
ऋषि दयानन्द का जीवन-चरित्र	..	२)
दिल्ली के वे स्मरणीय २० दिन	.	॥)

धार्मिक तथा दार्शनिक

सन्ध्या-सुमन	श्री नित्यानन्द	१॥)
स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश तीन भाग		३॥)
आत्म-मीमांसा	श्री नन्दलाल	२)
वैदिक पशुयज्ञ-मीमांसा	श्री विश्वनाथ	१)
अथर्ववेदीय मन्त्र-विद्या	श्री प्रियरत्न	१।)
सन्ध्या-रहस्य	श्री विश्वनाथ	२)
जीवन-संग्राम	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	१)

स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें

आहार (भोजन की जानकारी)	श्री रामरक्ष	४)
आसव-अरिष्ट	श्री सत्यदेव	२।)
लहसुन प्याज	श्री रामेश वेदी	२।)
शहद (शहद की पूर्ण जानकारी)	..	३)
तुलसी, दूसरा परिवर्द्धित संस्करण	..	२)
सोंठ, तीसरा	..	१॥)
देहाती इलाज, तीसरा संस्करण	..	१)
मिर्च (काली, सफेद और लाल)	..	१)
सांपों की दुनियां, (सचित्र) सजिल्द	..	४)
त्रिफला, तीसरा सवर्द्धित संस्करण	..	३)
नीम-बकायन (अनेक रोगों में उपयोग)	.	१)
पेठा, कद्दू (गुण व विस्तृत उपयोग)	..	॥)
देहात की दवाएं, सचित्र ॥)	बरगद	॥)
स्तूप निर्माण कला	श्री नारायण राव	३)
प्रमेह, श्वास, अर्शरोग		२)
जल चिकित्सा	श्री देवराज	१॥)

विविध पुस्तकें

विज्ञान प्रवेशिका, २ भाग	श्री यज्ञदत्त	१)
गुणात्मक विश्लेषण (बी एस सी के लिए)		[illegible]
भाषा-प्रवेशिका (वर्धायोजनानुसार)		॥)
आर्यभाषा पाठावली	श्री भवानी प्रसाद	१॥)
आत्म बलिदान	श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति	२)
स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा	.	१॥)
जमींदार	..	२)
सरला की भाभी, १, २ भाग	..	२), ३॥)

प्रकाशन मन्दिर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।